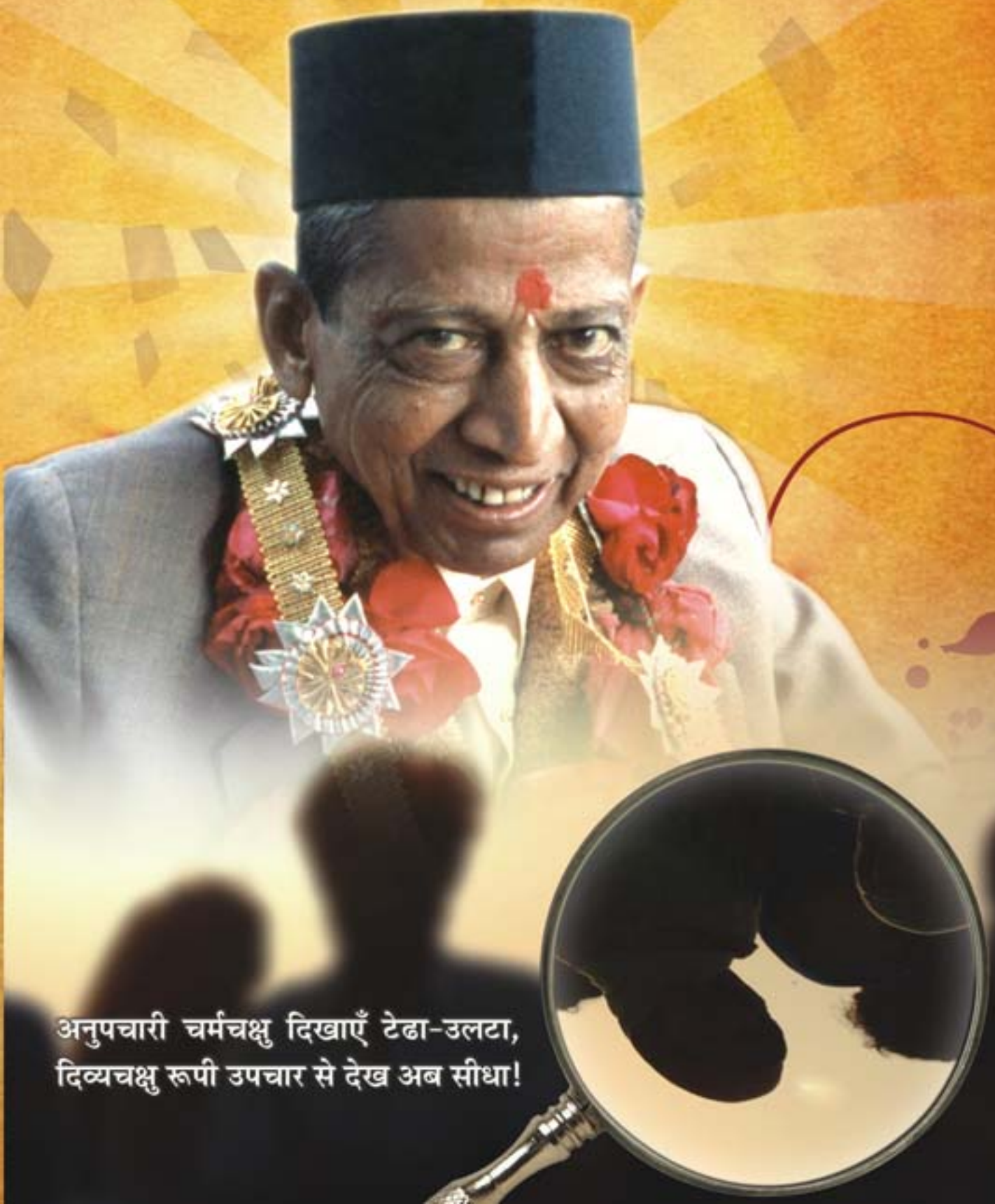


अक्टूबर २००९

दादावाणी

मूल्य रु. १०



अनुपचारी चर्मचक्षु दिखाएँ टेढा-उलटा,
दिव्यचक्षु रूपी उपचार से देख अब सीधा!

तंत्री तथा संपादक :

दीपक देसाई

वर्ष: ४, अंक : १२

अखंड क्रमांक : ४८

अक्टूबर २००९

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंथर सीटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ वे,

पो.ओ.: अडालज,

जि.: गांधीनगर-३८२४२१

फोन : (०७९) ३९८३०१००

e-mail :

dadavani@dadabhagwan.org

अहमदाबाद : (079) 27540408

वडोदरा : (0265) 2414142

मुंबई : 9323528901

राजकोट त्रिमंदिर :

9924343478, 9274111393

U.S.A. : 785-271-0869

U.K.: 07956476253

Website : www.dadashri.org

Hindi.dadabhagwan.org

Publisher, Owner & Printed by :

Deepak Desai on behalf of
Mahavideh Foundation

5, Mamtapark Society,

Bh. Navgujarat College,

Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printer/Press :

Mahavideh Foundation

Basement, Parshvanath

Chambers, Nr.RBI,

Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल का

भारत : ८०० रुपये

यु.एस.ए. : १५० डॉलर

यु.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यु.एस.ए. : १५ डॉलर

यु.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O.

'महाविदेह फाउन्डेशन' के

नाम से भेजे।

दादावाणी

सीधा-टेढ़ा जानें वह 'आत्मा'

संपादकीय

व्यवहार में कईबार ऐसा अनुभव में आता है कि हम सीधा व्यवहार करते हों मगर सामनेवाले व्यक्ति के द्वारा टेढ़ा या उलटा व्यवहार ही होता रहता है और ऐसा भी होता है कि सामनेवाले व्यक्ति का व्यवहार सीधा और सरल हो मगर मन से, वाणी से या वर्तन से हमारा उसके साथ टेढ़ा व्यवहार हो जाता है। इसकी क्या वजह हो सकती है? इसका रहस्य समझते हुए परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) बताते हैं कि यह सारी झूझट अहंकार की ही है। अज्ञान मान्यता की वजह से दृष्टि टेढ़ी हो गई है, और उसका यह परिणाम है।

जगत् की दृष्टि से जो सीधा या टेढ़ा है, वह बुद्धि की अपेक्षा से है। सीधा और टेढ़ा, लायक और नालायक, आदि, ऐसे कई द्वंद्ववाला यह समाज है। भगवान की दृष्टि में सीधा या टेढ़ा होता ही नहीं है, सारे द्वंद्व ज्ञेय ही हैं। हमें रास नहीं आया इसलिए उसे 'टेढ़ा' कहा, 'बुरा' कहा और रास आने पर 'सीधा' कहा, 'अच्छा' कहा। टेढ़ा या सीधा, यह द्वंद्व है। आधार-आधारी है। यह समझ लेना जरूरी है कि सीधे या टेढ़े परिणाम वे हमारे ही कॉजिज के इफेक्ट्स हैं, इसलिए हमें किसी की भूल निकालनी नहीं चाहिए।

ज्ञानी पुरुष के पास आत्मज्ञान प्राप्ति के पश्चात् टेढ़ी दृष्टि सीधी हो जाती है। दृष्टि सम्यक् होती है। जब तक दृष्टि टेढ़ी थी तब तक मोह था, जिसके परिणाम स्वरूप कर्म बँधते थे। ज्ञान के बाद, मूल मोह जाता है और चारित्रमोह शेष रहता है। और फिर मन-वचन-काया से जो कुछ भी टेढ़ा या सीधा उदय में आता है वह भरे हुए माल के तौर पर निकल रहा है। हरएक की प्रकृति खुल रही है, ऐसा समझ में आ जाने के पश्चात् राग-द्वेष नहीं होने चाहिए न?

दादाश्री कहते हैं कि जहाँ कहीं भी किसी के साथ मतभेद हुआ, तो वह आपकी निर्बलता की निशानी है। लोग गलत नहीं हैं, टकराव हुआ तो वहाँ हमारी ही भूल है, और इस प्रकार उसे खुद की भूल समझेंगे तभी इस जगत् से मुक्त होंगे। हमारे कारण सामनेवाले को बुरा लगे, अड़चन हो, ऐसा बोलना वह सबसे बड़ा गुनाह है। और यदि किसी और ने ऐसा कहा हो तो भी उसे अनसुना करके किसी पर जाहिर नहीं होने देना, वही मनुष्य कहलाए।

हम अब केवल मनुष्य ही नहीं हैं किंतु महात्मा के पद में आए हैं, इसलिए हमारी ऐसी जागृति होनी चाहिए कि हमारे निमित्त से किसी को दुःख नहीं पहुँचे। हमें अब छूटना है इसलिए टेढ़ों के साथ ऐडजस्टमेन्ट लेकर हल निकालिए। जितने ऐडजस्टमेन्ट्स लेंगे उतनी शक्तियाँ बढ़ेंगी। उलटी राह खर्च होनेवाली शक्तियों को सीधी राह पर खर्च करनी है। मोक्षमार्ग की प्रगति हेतु खर्च करनी है। उदयाधीन भिन्न-भिन्न प्रकृतियों को बिना राग-द्वेष के देखना है और उनका समभाव से निपटारा करना है। विज्ञान क्या कहता है? राग-द्वेष मत कीजिए, वीतराग हो जाइए।

वीतरागता के उस पद तक पहुँचने हेतु हमारे पुरुषार्थ में वह जरूरी और सच्ची समझ परम पूज्य दादाश्री के द्वारा उद्बोधित सत्संग निर्झर के इन संकलित अंशों में से हमें प्राप्त हो यही अभ्यर्थना।

दीपक देसाई ...

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदुभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

सीधा-टेढ़ा जानें वह ‘आत्मा’

मार खाने से होता है इन्वेन्शन

प्रश्नकर्ता : दादाजी, सीधे, सरल और सेवाभावी मनुष्यों का विकास, बुरे मनुष्यों की तुलना में कम क्यों होता है?

दादाश्री : बुरे मनुष्यों का विकास होता ही नहीं है। किंतु बुरे मनुष्यों की बुराई में वृद्धि होने के बाद उन्हें मार पड़ती है। तब उनका ‘इन्वेन्शन’ चलने लगता है। (यह मार मुझे क्यों पड़ी?) उसके बाद वह बुरा मनुष्य उस सीधे मनुष्य की तुलना में आगे निकल जाता है। और वह सीधा मनुष्य तो धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहता है! उसका स्टेशन दो घंटे के बाद भी नहीं आता! उसे कोई अड़चन भी नहीं आती है। और राह भूलने पर, कुछ नहीं मिलने पर, ‘इन्वेन्शन’ होता है।

कुदरत का ऐसा नियम है कि जितने भी जीव मोक्ष में गए उनमें से अस्सी प्रतिशत नर्क में जाने के बाद में ही मोक्ष में जा पाए हैं! इसलिए, मार पड़नी ही चाहिए। यदि खाना-पीना सब मिलता रहे, सब लोग ‘आइए, पधारिए, पधारिए’, करें तो ‘इन्वेन्शन’ रुक जाता है।

जहाँ पर, ‘मैं कर रहा हूँ’, ‘मैं कर्ता हूँ’, ‘मैं भोगता हूँ’ ऐसा है, जब तक यह ‘मैं पन’ है तब तक सत्धर्म उत्पन्न नहीं होता है। हाँ, लौकिक धर्म उत्पन्न होता है। अलौकिक धर्म में तो मार खाने पर ही अंदर ‘इन्वेन्शन’ होता है, वर्ना ‘इन्वेन्शन’ कैसे होनेवाला है।

आत्मा किसी को मिल जाए ऐसा है ही नहीं, केवल तीर्थकर भगवंतों को मिला था। जगत् ने आत्मा को जैसा माना है, आत्मा वैसा नहीं है। आत्मा संबंधी जो जो कल्पनाएँ की गई हैं वे सभी कल्पित हैं। किंतु, उनकी भाषा में उनके लिए वह बराबर है। कुदरत ने उनके लिए ऐसे हिसाब संजोए हैं, और उसके अनुसार वे भोगते हैं। शास्त्रों में जो आत्मा का शब्दज्ञान दिया गया है, वह संज्ञा ज्ञान है। यदि ज्ञानी के पास से संज्ञा समझ जाए तो आत्मा की प्रतीति होती है और अंत में कैवल्यज्ञान होता है।

टेढ़ों के साथ टेढ़े होने पर...

प्रश्नकर्ता : दुनिया टेढ़ी है, किंतु यदि हम अपने स्वभाव के अनुसार सरलता का बरताव करें तो मूर्खों में गिने जाते हैं, तो हम क्या करें? तब सरलता छोड़कर टेढ़े हों, या फिर मूर्खों में गिने जाएँ?

दादाश्री : ऐसा है कि कितने ही जन्मों की कमाई होने पर सरलता उत्पन्न होती है। जो टेढ़ा है वह हमारी कमाई गँवा देने पर आमदा है, तो क्या हम अपनी कमाई गँवा देंगे? अपनी कमाई गँवा दी यानी हम भी टेढ़े ही हो गए, क्या रहा फिर हमारे पास? सारा सामान ही खलास हो गया! और फिर नादारी ही निकले न!

प्रश्नकर्ता : मतलब उसकी तुलना में, क्या मूर्खों में गिने जाना ही बेहतर है?

दादाश्री : नहीं, इस जगत् में कोई मूर्ख नहीं है ऐसा है ही नहीं। जहाँ सभी मूर्ख ही हैं, तब उसमें

दादावाणी

सिर्फ यदि कोई हमें मूर्ख कहे तो कहने दीजिए न! यानी आप मन में ऐसा मत रखना कि 'मुझे मूर्ख मानते हैं।' फिर है कोई झँझट? सरलता तो कई अवतारों की कमाई है, उस कमाई को खो देना वह तो बहुत बड़ा जोखिम है। आप तो वकील ठहरे, जो कभी खोनेवालों में से नहीं है, तो फिर सोचकर बताइए कि इतनी बड़ी पूँजी खो सकते हैं क्या? इसलिए जो कुछ थोड़ा-बहुत मिले उसमें हर्ज नहीं है। यदि आपको कोई मूर्ख मानें, तब उसमें तो जो मानता है उसकी जोखिमदारी है, उसको दोष लगेगा। बोलनेवाले की जोखिमदारी है, उसमें आपको क्या है? आप तो सरलता से बरतते हैं तो सरलता तो बहुत ऊँची वस्तु है। टेढ़ों के साथ सरल रहना यह कोई ऐसी-वैसी वस्तु नहीं है, वह आसान वस्तु नहीं है। आपने जो कमाई की हो और अब उसे यदि आप खो देना चाहते हों तो आप सबके साथ लड़ाई-झगड़ा करना।

निज दोष नहीं दिखाई दे तो?

खुद अनंत दोषों का भाजन है, फिर भी खुद का एक भी दोष दिखाई नहीं देता है। अपने 'सेल्फ' का रुख होने के बाद इस 'चंदुभाई' के प्रति आपका पक्षपात नहीं रहे, और तब दोष दिखाई देते हैं। किंतु अभी तो 'मैं ही चंदुभाई' यानी जज भी आप, वकील भी आप और आरोपी भी आप! बोलिए अब, एक भी दोष दिखाई देगा क्या? इसका ठिकाना कब लगे? ऐसे कब तक भटक-भटक करते रहना?

अब समय बड़ा विचित्र आनेवाला है। ज्ञानी पुरुष से भेंट हुई इसलिए अब भावना करके अपना मोक्ष का काम निकाल लेना है। 'ज्ञानी' के पास सीधा होना पड़ेगा। आड़ापन नाम मात्र को नहीं चलनेवाला।

हमें 'ज्ञानी पुरुष' के कहे अनुसार चलना है, क्योंकि 'ज्ञानी पुरुष' कौन कहलाए? जो हर तरह से सीधे हो गए हों! अर्थात् गालियाँ सुनने में भी सीधे और गालियाँ सुनाने में भी सीधे। किंतु गालियाँ

सुनाने का समय आने पर वह गालियाँ सुनाते नहीं हैं। क्योंकि वह सीधे हो गए हैं, इसलिए नहीं सुनाते न! हम तो शुरू से ही सीधे हो गए हैं। और आपको भी तो आड़ापन निकालना ही होगा न? यह सारा आड़ापन कब तक चलेगा? वह तो कभीकभार ही आड़ापन का पता चलता है, वरना तो, 'ज्ञानी पुरुष' के पास आने पर उसका पता चले कि 'अरे ! अभी इतना आड़ापन भरा पड़ा है?'

बाधक होता है केवल आड़ापन

अर्थात् सीधे होने की ज़रूरत है। देखिए, मैं सीधा हो गया हूँ तो है किसी प्रकार की झँझट? कई जन्मों से मार खा-खाकर के सीधा हो गया हूँ। कोई आड़ापन ही नहीं है न अब। आप कहें कि नीचे चलिए तो नीचे चलेंगे। हममें आड़ापन नाम मात्र को नहीं होता। तब भी कोई कहेगा कि, 'आप ऐसे हैं, वैसे हैं।' मगर वह तो 'जो' ऐसा है उसे कहते हैं न। मैं, कहनेवाले को झूठा भी नहीं कहूँगा कि 'तू झूठा है', और वह किसे कहता है यह भी मैं समझ जाऊँगा। वह मुझे नहीं कहता है मेरे 'पड़ोसी' को कहता है।

प्रश्नकर्ता : आपके पड़ोसी कौन?

दादाश्री : ये 'ए. एम. पटेल' इज़ द फर्स्ट नेबर। 'ही इज़ कॉन्ट्रैक्टर ओल्सो, इन्कमटैक्स पेयर ओल्सो।' उससे कहते हैं। लोग कहेंगे, 'संसार में ज्ञान नहीं होता।' अरे! 'इन्कमटैक्स पेयर' हैं और 'कॉन्ट्रैक्टर' का धंधा करते हैं, फिर भी 'ज्ञान' हुआ। यह देखिए तो सही? इसलिए इस संसार में बाधक क्या है? तेरा आड़ापन ही बाधक है, और मैंने तो खुद में बहुत आड़ापन देखा था। और वे सारे आड़ेपन खलास होने पर तो मैं 'ज्ञानी' हो गया। अंदर आड़ापन नहीं रहे तो समझना कि ज्ञानी हो गए।

समझने जैसी बात 'ज्ञानी' की

'ज्ञानी पुरुष' की बात त्रिकाल सिद्ध कहलाए।

वे जो बोलते हैं न, तीर्थकर भी वही कहते हैं। 'ज्ञानी पुरुष' की बात दरअसल सीधी है। मोक्ष भी सीधा है। मोक्ष में सभी को प्रवेश करने देते हैं, प्रवेश नहीं करने देंगे ऐसा नहीं है। किंतु मोक्ष के लिए लायक होना चाहिए। यदि आड़ा-टेढ़ा चले, तो वहाँ पर प्रवेश नहीं कर सके। उसके बजाय पहले से ही सीधे हो जाने में क्या हर्ज है? मोक्ष कठिन नहीं है, मगर 'ज्ञानी पुरुष' की बात समझ में आई तो काम का है। और अगर समझ में नहीं आई तो उलझनें पैदा होंगी।

सीधा तो होना पड़ेगा न?

प्रश्नकर्ता : आड़ेपन जाते क्यों नहीं हैं?

दादाश्री : कैसे जाएँ मगर? कई दिनों से मुकाम किया है। और फिर किराए के नियम के मुताबिक, प्रवेश करने के बाद निकलने का नाम नहीं लेते। यहाँ रहने के लिए आए हुए आड़ेपन, क्या फिर निकलेंगे?

मैंने एक आदमी से पूछा, 'इतना ज्यादा आड़ापन क्यों करते हो? थोड़ा आड़ापन कम कीजिए न?' तब वह कहने लगा, 'दुनिया में बिना आड़ेपन के तो चलता ही नहीं।' इस पर मैंने कहा, 'साँप को भी बिल में प्रवेश करते समय सीधा होना पड़ता है। यदि मोक्ष में जाना हो तो सीधे हो जाइए न! अन्यथा लोग सीधा करेंगे तब मोक्ष में जा पाएँगे। उसके बजाय खुद ही सीधे हो जाइए न!' लोग तो मार-मार के सीधा करें, उसके बजाय खुद ही सीधे हो जाएँ तो उसमें क्या गलत है? इसलिए खुद ही सीधे हो जाइए। लोग (कषायों की मार) मार-मार के सीधा करते हैं या नहीं करते?

प्रश्नकर्ता : करते हैं। मगर फिर भी लोग सीधे नहीं होते हैं न?

दादाश्री : किंतु कभी न कभी तो सीधे हुए बगैर छुटकारा ही नहीं है न! कड़वा अनुभव होने

के बाद फिर आड़ापन अपने आप छूट जाए। आड़ापन तो अपार है। किसी भी जन्म में कोई सीधा करनेवाला मिला ही नहीं है, और यदि मिला होता तो यों भटक नहीं रहे होते। अर्थात्, बाकी सब उसे आ जाता है, मगर मनुष्य सीधा नहीं होता। इसलिए जगत् के लोग क्या करते हैं? मार-मार के सीधा करते हैं। कहेंगे 'यह अभी भी सीधा नहीं हुआ? तो और मारो उसे।' यानी फिर पत्नी मारे, बच्चे मारें, सब लोग (कषायों की मार) मारें और उसे सीधा करते रहें।

मुझे तो कितने ही जन्मों से लोगों ने मार-मार के सीधा कर डाला है, तब मैं सयाना हो गया। जब मैं सीधा हुआ, तो देखिए, मुझे 'यह' ज्ञान मिल गया न!

ज्ञानी समझाए वीतराग धर्म

हमारा यह ज्ञान वह वही का वही विज्ञान है। मगर लौकिक ज्ञान गली-कूचोंवाला है। आज लोग गली-कूचों में घुस गए हैं। और वह भी एक ही आड़ी गली नहीं, मगर उस आड़ी में फिर सीधी और उस सीधी में फिर तिरछी। ऐसी गलियों में घूसे हैं कि फिर मिल ही नहीं पाए। अब वहाँ ज्ञान पहुँचाना यह कोई आसान बात थोड़े ही है?

महावीर भगवान ने खुद ही कहा है कि हमारे शिष्य सभी वक्र और जड़ होंगे। क्योंकि ऐसा नियम ही होता है। केवल इसी चौबीसी का नहीं, किंतु प्रत्येक चौबीसी का ऐसा ही नियम होता है।

अब इसमें क्या जैन धर्म का कोई दोष है? यह कालचक्र ही ऐसा है, इसलिए इस कालचक्र में ऐसा ही होता है। यह तो ज्ञानी पुरुष कभी-कभार ही होते हैं। प्रत्येक पाँचवी कालावधि में होते ही हैं। वर्ना इस जगत् का, यह अंतिम तीर्थकर के शासन का क्या हाल होता? जंगल ही हो जाता। इसलिए ऐसी कोई न कोई पुष्टि होती है। उसके होने से सब

दादावाणी

चलता रहता है। शासन शोभायमान होगा। इस समय बहुत अच्छी तरह से शोभायमान होगा।

यह भगवान का ज्ञान तो कैसा स्ट्रेइट फोरवर्ड (निष्कपट)! यह स्ट्रेइट लाइन और वह स्ट्रेइट लाइन (सीधी समांतर रेखाएँ)। जैसे कि, नोर्थ, नोर्थ-वेस्ट, साउथ वेस्ट (उत्तर, वायव्य, नैऋत्य), ऐसा सब सीधा मगर इग्जैक्ट फिगरवाला (सुनिश्चित अंकोंवाला)। और आज का ज्ञान तो गली-कूचोंवाला, गली में गली और उसमें भी गली, ताकि गोल चक्कर लगाकर वापस वहीं के वहीं आ पहुँचे। इसलिए यह अक्रमज्ञान प्रकट हुआ है।

उलटी मान्यता छूटे सीधे ज्ञान से

उदाहरण के तौर पर, हमने दिन में कोई भूतकथा पढ़ी या सुनी हो और फिर रात में अकेले सो गए हों और पासवाले कमरे में यदि गिलास खड़कने की आवाज़ सुनाई दी, भले ही चूहे ने खड़खड़ाया हो, मगर हमारे मन पर रात के साढ़े बारह बजे भी ऐसा असर होगा कि भूत आया है। इसलिए मारे डर के उठकर देखने भी नहीं जाएँगे और सारी रात डर का वेदन करते रहेंगे। फिर सुबह उठते ही वहाँ जाकर देखने पर पता चले कि यह तो चूहे ने किया है।

वह भूत का असर सारी रात इतना परेशान करता रहता है। और यह अज्ञानता का भूत जो प्रवेश कर गया है वह अनंत जन्मों से परेशान कर रहा है। वर्ना आप तो मुक्त ही हैं। आपको कोई बंधन है ही नहीं। मगर आपको ऐसा असर होना चाहिए। ऐसा अनुभव होना चाहिए।

सारे संतपुरुष बताते हैं, कि ऐसे कान पकड़िए (बायाँ हाथ सिर के पीछे ले जाकर दाहिना कान पकड़िए)। 'अरे भैया, इसमें तो मेरा दम निकल जाता है। मेरा हाथ दुःखने लगता है। ऐसे सीधा पकड़ाइए न!' मगर सीधा नहीं पकड़ाते। क्योंकि

उन्होंने टेढ़ा पकड़ा है। और मैंने तो सीधा पकड़ा है इसलिए मैं आपको भी सीधा पकड़वा देता हूँ। क्योंकि मैं देखकर बोलता हूँ। जगत् के संत, नीचे रहकर, सोचकर बोलते हैं, जबकि मैं ऊपर रहकर, बिना सोचे, आँख मुँदकर बोलता हूँ। क्योंकि मैं ऊपर चढ़ा हूँ और सब मेरे अनुभव में आया है। और ये लोग नीचे रहकर वर्णन करते हैं। इसीकी मार खिलाई है न सारी!

ज्ञानी मिलने पर, काम निकाल लो

वास्तविक जगत् (जगत् की वास्तविकता) किसी काल में लोगों के लक्ष्य में आया ही नहीं है। जब ऐसे ज्ञानी हुए थे तब लक्ष्य में आया था, किंतु वह ज्ञानियों के लक्ष्य में ही आया था। ज्ञानियों ने जिन लोगों को बताया था उन लोगों के लक्ष्य में नहीं आया। जो अमुक लोग मोक्ष में गए वे ज्ञानी की कृपा से मोक्ष में गए, मगर (उनको स्वयं) बात समझ में आई नहीं है। यह कुदरत की गहन समस्या है, इसलिए इसमें से कोई छूटा नहीं है। और जो मुक्त हुए, वे कहने के लिए रहे नहीं हैं। मैं ही अकेला, छूटने के बाद भी कहने के लिए रहा हूँ। इसलिए सँभलकर काम निकाल लीजिए। हम तो आपका मोक्ष का काम निकलवाने के लिए ही बैठे हैं।

कैसी करुणा! टेढ़ों के साथ भी सीधे

हम कहते हैं कि, 'आप यहाँ आना, हम आपको मोक्ष देंगे, हम आपको ज्ञान देंगे, आपका ऐसा कर देंगे।' यह एक प्रकार की खटपट ही है न?

प्रश्नकर्ता : वह करुणाभाव प्रकट हुआ है।

दादाश्री : हाँ, करुणाभाव है। मगर वह भी एक तरह से खटपट ही है न? करुणाभाव तो तीर्थकरों में भी है। लेकिन वे एक शब्द भी बोलते नहीं। कोई कहीं गड्ढे में गिर रहा हो तब भी नहीं बोलें। खुद ज्ञान में देखें, मगर कुछ बोलते नहीं। कोई यदि सीधा हो जाए तो उसे सबकुछ दें और

कोई टेढ़ा हो तो कुछ भी नहीं बोलें। और हम तो, यदि कोई टेढ़ा हो तो कहें कि, 'ऐसे टेढ़े क्यों होते हो?' ऐसा क्यों? हमारा इसमें क्या लालच है? हमारे मन में एक इच्छा है कि हमारे जैसा सुख उसे भी बरते। वह दुःख से बचे। जो कोई भी इच्छा है न, चाहे ऐसी ही क्यों न हो, किंतु वह खटपट ही है न? क्या इसे खटपटिया नहीं कहते? लोग हमसे पूछते हैं कि, 'क्या आप वीतराग हैं?' इस पर मैं कहता हूँ कि, 'हम खटपटिये वीतराग हैं।' और महावीर भगवान खटपटिया नहीं थे, चोखे वीतराग थे! जितना उदय रहा उतना ही करेंगे। लेकिन हमारा उदय खटपटिया होता है, उदय खटपट मिश्रित होता है और भगवान को मिश्रित नहीं होता।

खटपटिया वीतराग का अर्थ लोगों को अपनी भाषा में नहीं लगाना चाहिए क्योंकि लोगों के हित के लिए ही खटपट करनी पड़ती है। मेरा अपना हित तो संपूर्ण रूप से हो ही गया है।

मोक्ष अर्थात् मुक्तभाव

यह ज्ञान ही आपको ऐसा दिया है कि फिर किसी की ज़रूरत ही नहीं पड़े। यदि दादा के साथ बैठकर दादा जैसे नहीं हो सकें तो उसमें खुद का ही दोष है न? यह ज्ञान तो क्रियाकारी है। अंदर निरंतर काम किया करे। क्या आपको अंदर कुछ करना पड़ता है?

प्रश्नकर्ता : अपने आप होता रहता है।

दादाश्री : अब ऐसा क्रियाकारी ज्ञान प्राप्त होने के बाद यदि मोक्ष नहीं होता तो वह हमारी (आपकी) ही भूल है न? मोक्ष तो यहाँ ही हो जाना चाहिए। मोक्ष कहीं लेने नहीं जाना है। मोक्ष मतलब, हमारा मुक्तभाव। यह सब (बाहर के संजोग) होने के बावजूद भी हम मुक्त। और यह सब नहीं हो, ऐसा कभी भी होनेवाला नहीं है, इसलिए पहले से चेत जाइए। इन सभी (संजोग) की हाज़िरी में ही

मुक्त होना पड़ेगा। बंधन होने पर ही मुक्त भाव का अनुभव कर सकें न? बंधन नहीं रहा तो मुक्त भाव का अनुभव ही कैसे कर सकेंगे? मुक्तभाव का अनुभव किसे करना है? जो बंधन में आ पड़ा है, उसे अनुभव करना है।

यदि आपकी आँखों पर पट्टी बाँधकर आपको खंभे के साथ रस्सी से कसकर बाँध दिया हो, और फिर छाती के आगे का रस्सी का एक पेच मैं ब्लेड से काट डालूँ, तो क्या आपको अंदर कुछ मालूम पड़ेगा? आगे से रस्सी छूटने का आपको खुद को अनुभव होगा। उस समय आप अंदर समझ जाएँगे कि मैं मुक्त हुआ, यानी काम हो गया।

ऐसा, मनुष्य को मुक्तता का भान होना चाहिए। वह मोक्षभाव कहलाए। मुझे निरंतर मुक्तता का भान रहता है, 'एनीव्हेर', 'एनी टाइम' (कहीं भी, कभी भी) द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव कोई मुझे प्रतिबद्ध नहीं करता। वस्तु प्रतिबद्ध करनेवाली नहीं है। यह तो गधा खेत खाता है और लोग जुलाहे को मार मारा करते हैं।

प्रतिबद्धता का कारण, वक्रदृष्टि

प्रश्नकर्ता : तो फिर प्रतिबद्ध कौन करता है?

दादाश्री : स्वरूप का अज्ञान ही प्रतिबद्ध करनेवाला है। आपकी दृष्टि वक्र है तभी प्रतिबद्ध करता है।

ज्ञानी पुरुष, मुक्त पुरुष के मिलने के अलावा कभी भी मोक्ष की आशा किसी को नहीं रखनी चाहिए। आप लाख शास्त्र पढ़ें किंतु शास्त्र पढ़ने से दृष्टि बदलनेवाली नहीं है। शास्त्र दृष्टि नहीं बदलता। आपकी दृष्टि जैसी थी वैसी की वैसी रखेगा। उलटे वक्रदृष्टि को मज़बूत करता है। और ज्ञानी पुरुष दृष्टि बदल देते हैं। केवल दृष्टि ही। दृष्टि ही भिन्न है। आप उधर देख रहे हैं, मैं इधर देख रहा हूँ। मैं

आपको दृष्टि ही बदल देता हूँ। मगर दृष्टि बदलना ज्ञानी पुरुष का ही काम है। ज्ञानी पुरुष की कृपा के सिवा, भगवान की कृपा के सिवा कभी भी दृष्टि नहीं बदलती। उसके लिए वीतराग विज्ञान चाहिए।

‘ज्ञानी’ की कृपा से दृष्टि बदले

प्रश्नकर्ता : यानी, मुख्य रूप से अंतर्मुख दृष्टि होनी चाहिए न?

दादाश्री : ऐसा है कि कुछ लोग तो अंदर देखा करते हैं। अरे! अंदर कुछ भी नहीं है। अंदर तो ‘ज्ञानी पुरुष’ के दिखलाने के बाद दिखाई दे। वर्ना अंदर तो आँख मुँदते ही सब स्त्रियाँ दिखाई देती हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी, अंतर्मुख होने के लिए किसी के आधार की जरूरत पड़ती है!

दादाश्री : वह तो कृपा होने पर अंतर्मुख हो सके। कृपा के बिना अंतर्मुख कैसे हो सके? अन्यथा, लोगों को भीतर कारखाने दिखाई दें और बड़ा-बड़ा चित्रण दिखाई दे!

प्रश्नकर्ता : ऐसी कृपा कब होती है?

दादाश्री : कृपा तो, ‘ज्ञानी पुरुष’ के दर्शन करने पर, उनका विनय करने पर, उनकी आज्ञा में रहने पर होती है। वर्ना क्या यों ही कृपा होती होगी? अथवा क्या विरोधी होने पर कृपा होती होगी? ऐसे विरोधी होने पर भी ‘ज्ञानी पुरुष’ को आपत्ति नहीं है, मगर उसका कितना बड़ा नुकसान होता है। हमें तो कोई गाली दे तो भी हर्ज नहीं है। किंतु इसमें गाली देनेवाले की क्या गत होगी! इसलिए हम आपको समझाते हैं कि सीधे रहिए।

यहाँ ‘ज्ञानी पुरुष’ के पास सीधा हो जाना चाहिए, यहाँ पर टेढ़ा होने से काम नहीं होता। यहाँ तो आज्ञा में रहना चाहिए। क्योंकि इस ‘ज्ञानी पुरुष’ के तो दर्शन ही करने को नहीं मिलते।

कर्म के पच्चड़ आड़े-टेढ़े होने पर

प्रश्नकर्ता : आप ज्ञान देते हैं तब कुछ लोगों को तुरंत ही फिट हो जाता है और कईयों को तो कितनी भी माथापच्ची करने पर भी फिट नहीं होता है, तो क्या उनमें शक्ति की कमी होती होगी?

दादाश्री : वह शक्ति की बात नहीं है, वह तो कुछ लोग कर्म के पच्चड़ आड़े-टेढ़े लाए होते हैं, और कुछ लोगों के पच्चड़ सीधे होते हैं इसलिए पच्चड़वाला खुद ही खींच निकालता है। टेढ़े पच्चड़वालों का पच्चड़ टेढ़ा होता है इसलिए खींचने पर भी नहीं निकलता है। अँकुड़े टेढ़े होते हैं। हमारे पच्चड़ सीधे थे इसलिए झटपट निकल गए। हमें टेढ़ा नहीं आता। हमारा तो बिलकुल चोखम्-चोखा, और खुलम्-खुला है सब। आप तो कुछ टेढ़ापन सीखे होंगे न। हैं तो आप अच्छे घर के मगर बचपन में टेढ़ापन घुस गया हो तो क्या किया जाए? अंदर कीलें टेढ़ी होने पर खींचने में जोर देना पड़े और उन्हें निकलने में भी देर लगती है।

दिखाया सरल मार्ग ज्ञानी ने

जिस मार्ग पर मैं चला हूँ उस मार्ग पर आपको चला रहा हूँ और मैं तो आपसे एक ही कदम आगे हूँ। आप केवल मुझे फोलो (मेरा अनुसरण) करते हैं, उतना ही है। मैं ज्यादा आगे नहीं हो गया हूँ। मेरे पास जो थीं वे सारी वस्तुएँ मैंने आपको दे दी हैं। गुप्त कौन रखता है? जिसे गुरु होना है वह। गुरु सारी चाबियाँ शिष्यों को नहीं देता। मुझे तो गुरु होकर रहना ही नहीं है। मेरी तो यही इच्छा है कि आप मेरे जैसे हो जाएँ। मैं फिर कहाँ गुरु का धंधा लेकर बैठ जाऊँ, हमेशा गुरु बनने का? वह भी एक बिज्ञान ही है न?

एक जिज्ञासु मुझसे कहे, ‘ये गुरु ऐसे टेढ़े क्यों हैं?’ मैंने कहा, ‘लकड़ियाँ जब तक टेढ़ी हैं तब तक आरी टेढ़ी ही चाहिए। वे लकड़ियाँ ही टेढ़ी

हैं।' इस पर वह कहे, 'तो अब वे सीधी कब होगी?' मैंने कहा, 'ये लकड़ियाँ अपनेआप सीधी होंगी। यह ऊमस आई है न?' अब सीधी हो जाएँ ऐसी ऊमस आई है। इसलिए लकड़ी चाहे कैसी भी टेढ़ी होगी तो अपनेआप सीधी हो जाएगी, मार खा-खाकर, और फिर गुरु भी ऐसे अच्छे आएँगे। आप देखना तो सही।

उसमें नहीं कोई कसूर ज्ञानी का

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपका ऐसा भाव है कि हम आपके नज़दीक हैं, मगर क्या सचमूच हम आपके उतने करीब है?

दादाश्री : हाँ। (मुझे बुखार नहीं है, और) यदि आपको बुखार चढ़ा हो तो उसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है, मगर आप मेरे साथ ही हैं। और आपका बुखार उतर जाएगा थोड़े समय में, फिर तब भी आप मेरे साथ ही हैं। लिफ्टमार्ग है यह तो। हाँ, आप मेरे साथ टेढ़े हो जाएँ तो आपका नुकसान होगा। मुझमें कोई ऐसा लक्षण नहीं है कि आपको मेरे साथ टेढ़ा होना पड़े। मुझमें यदि ऐसा टेढ़ा लक्षण हो और आप टेढ़े हों तो बात अलग है। आप अपनेआप टेढ़े हों, ऐसा नहीं होना चाहिए।

आपके कर्म आपको टेढ़ा करते हैं, इसलिए यह आपको समझ लेना है, और यही आपको अपने आप को कहना चाहिए कि, 'अरे, यहाँ पर भी, इस जगह पर भी तू सीधा नहीं रहता?' अर्थात्, भीतर जब कर्म उलटा दिखलाए तो उस वक्त हम कहें, 'यहाँ पर भी तू सीधा नहीं रहता? सीधा रह, वर्ना तुझे डिसमिस कर दूँगा।' बुद्धि आपको कुरेदेगी, लेकिन फिर भी यह अक्रमविज्ञान रक्षणवाला है, अंत तक रक्षणात्मक है। हमें गालियाँ दे गया हो उसका भी हम रक्षण करते हैं। क्योंकि जो गालियाँ देता है वह अपने हिसाब से नहीं देता। उसके भीतर उसके कर्म के भूतों ने घेर लिया है। क्या कर्म ऐसे नहीं घेर लेते? फिर इस पर भी हमारा वहाँ क्या फर्ज

बनता है? किसी का अकस्मात हो गया हो वहाँ हमारा क्या फर्ज बनता है?

प्रश्नकर्ता : उसे बचाना, उसकी मदद करना।

दादाश्री : हाँ, उसको पट्टी बाँध देना, कैसे भी करके समाधान कर देना। हमारा यह फर्ज बनता है।

ज्ञान से सीधा चले संसार

यह ज्ञान मिलने के बाद हमारा संसार जो आड़ा-टेढ़ा चलता था न, वह सीधा होता जाता है, उलटे सरल हो जाता है हमारे लिए। मुश्किलें ज्यादा पड़ती हों, वे कम हो जाएँ। दिन-ब-दिन ज्यों ज्यों यह ज्ञान परिणामित होता जाए त्यों त्यों मुश्किलें कम होती जाएँ। सारे काम सरल हो जाएँ। यह संसार टेढ़ा किस ने किया है? अहंकार ने टेढ़ा किया है। वर्ना, संसार सीधी रेखा में ही था, लेकिन अहंकार ने रेखाएँ ज़रा आड़ी-टेढ़ी कर डालीं। यह सारी झँझट अहंकार की ही है। जीव का स्वभाव मूलतः ही टेढ़ा है और उसकी ही मार खाता रहता है। यदि वीतरागों की तरह सयाने हो जाएँ तो कोई नुकसान नहीं है।

प्रश्नकर्ता : क्या ऐसा होता है कि टेढ़े को टेढ़ा अहंकार आता है और सीधे को सीधा अहंकार आता है?

दादाश्री : अलग-अलग ही है।

जैसे, आकाश से वर्षा का पानी बरसता है वह मीठा होता है लेकिन नीम पीता है तो कड़वा हो जाता है और आम्रवृक्ष के पीने पर अलग हो जाता है। उसी प्रकार हरएक में अलग-अलग हो जाता है। हरएक का स्वभाव अलग-अलग दिखाई देता है। वैसे मनुष्य में अहंकार जो है वह एक ही तरह का है, किंतु उस पर अलग-अलग रंग लगता रहता है।

अंतर, श्रद्धा और प्रतीति में

प्रश्नकर्ता : हम सब जो ऐसा कहते हैं कि

दादावाणी

‘ज्ञान प्राप्ति के बाद श्रद्धा बैठी’, तो क्या वह प्रतीति कहलाए? प्रतीति यानी क्या? श्रद्धा?

दादाश्री : श्रद्धा आदि सब स्टेज (स्तर) कहलाए और प्रतीति यानी इग्जैक्ट (यथार्थ) आ गया। प्रतीति मतलब पूरी मान्यता शत प्रतिशत परिवर्तित हो गई, और ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ यह बात निश्चित हो गई। ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ यह श्रद्धा बैठने के बाद वह उठ भी जाती है और प्रतीति उठती नहीं। श्रद्धा परिवर्तित हो जाए, प्रतीति परिवर्तित नहीं होती।

प्रतीति मतलब, उदाहरण के तौर पर, हमने एक लाठी यहाँ खड़ी की और उसके ऊपर यदि ज्यादा दबाव आया तो वह बीच में से टेढ़ी हो जाएगी मगर अपना स्थान नहीं छोड़ेगी। वैसे ही, कर्मों का उदय कैसा भी आए, बुरा उदय आने पर भी प्रतीति अपना स्थान नहीं छोड़ती। ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ यह भान चला नहीं जाता।

और गाढ़ प्रतीति यानी क्या? कि लाठी थोड़ी-बहुत टेढ़ी हो जाएगी, चाहे कितना भी दबाव क्यों न आता हो, किंतु तब भी ज्यादा टेढ़ी नहीं होती। टेढ़ी होने पर लोग कहें, ‘अरे! यह गई, गई...’ मगर नहीं, वह स्थान नहीं छोड़ती वह गाढ़ प्रतीति है।

अनुभव, लक्ष्य और प्रतीति। प्रतीति जो नींव है। वह नींव डालने के बाद लक्ष्य उत्पन्न होता है, फिर ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ यह लक्ष्य में निरंतर रहा करे। और जब फुरसत में बैठे हों, और तब थोड़ी देर के लिए ज्ञाता-द्रष्टा हुए, वह अनुभव। ज्ञाता-द्रष्टा अर्थात् बाहर का नहीं देखना है, इस प्रकृति को ही देखा करना कि यह प्रकृति कैसा पागलपन दिखाती है!

प्रश्नकर्ता : मतलब चंदुभाई (फाइल नं.१) को ही देखा करना?

दादाश्री : उसको ही देखा करना। (चंदुभाई) कैसा सयानापन करते हैं यह देखना, कैसा पागलपन करते हैं यह भी देखना। यह पागलपन करें तो उस

पर हमें चिढ़ना नहीं है और यदि सयानापन दिखाएँ तो उस पर राग भी नहीं करना है। हमें तो वीतराग रहना है। पागलपन करे तो वह करे, उसमें हमें क्या? प्रकृति के साथ पहले के जो संबंध थे, उनसे ‘हम’ अलग हो गए हैं। प्रकृति के लिए कब तक जिम्मेदार थे? ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ यह प्रतीति नहीं बैठी थी, तब तक। उसके बाद हम उसके जिम्मेदार नहीं रहे।

वक्र दृष्टि सीधी हुई, अब क्या?

आत्मा और देह दोनों को अलग करे ऐसा विज्ञान मैंने दिया है, इसलिए तेरी दृष्टि जो टेढ़ी थी वह अब सीधी हो गई। दृष्टि जब तक टेढ़ी थी तब तक तुझे मोह था और तब तक कर्म बँधते थे। किंतु आप कहें कि, ‘अरे, अभी मोह तो मेरा रहा है। अभी तो कपड़े अच्छे पहनते हैं, चश्मे की ज़रूरत है। ऐसा चाहिए, वैसा चाहिए, तेल चाहिए, इत्र चाहिए।’ तब कहे, ‘वह चारित्रमोह है, डिस्वार्ज मोह।’ चारित्रमोह यानी, उस व्यक्ति को अब मन में ऐसा नहीं होता कि बार-बार ऐसा सब प्राप्त हो। जो आया उसका निपटारा कर डाल। खारा आया तो कम खा। अच्छा आया तो खा आराम से मगर निपटारा कर डाल। समभाव से निपटारा करता है न? बस, हो गया फिर, उसके समान फिर रहा ही क्या अब?’

जिसकी दृष्टि ऐसी टेढ़ी हो उसे टेढ़ा दिखाई देता है, सीधी हो उसे सीधा दिखाई देता है, यानी हमें अपने आप निकल जाना है, निराग्रही रहना है।

भेद, व्यवहार और निश्चय चारित्र का

प्रश्नकर्ता : ‘बिना चारित्र के मोक्ष नहीं है और बिना मोक्ष के निर्वाण नहीं है।’ ऐसा कहा गया है न?

दादाश्री : चारित्र अर्थात्, आपकी समझ में क्या आया है यह आप अपनी भाषा में कहिए।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : चारित्र यानी अच्छी तरह वर्तन करना, जिसे हम स्ट्रेइट फोरवर्ड कहते हैं। जो आड़ा-टेढ़ा नहीं हो वह चारित्रवान कहलाए। वह प्रामाणिक होता है, ओनेस्ट होता है, नैतिकतावाला होता है।

दादाश्री : ऐसे तो अनेक सीधे लोग मिलें, किंतु उसे चारित्र कैसे कहा जाए? यह चारित्र तो मोक्ष का कारण है, उसके लिए कहा है। उस पहलेवाले चारित्र में तो, मनुष्य यदि सीधा हो तो कुछ लोग उसकी वाह-वाह करेंगे, उसे पैसे उधार देंगे, उसकी मदद करेंगे। और कुछ लोग उसके बारे में उलटा भी बोलेंगे। बस, हो गया, इसके आगे और कुछ नहीं होता।

चारित्र के दो प्रकार हैं। एक निश्चय चारित्र और दूसरा व्यवहार चारित्र। व्यवहार चारित्र मतलब किसी भी विषय के ऊपर वृत्ति नहीं। भगवान ने जो व्यवहार चारित्र बतलाया है, वह तो बहुत ऊँची वस्तु है। व्यवहार चारित्र संबंध में तो वीतराग के मत को जानना चाहिए कि वीतरागों का क्या मत है? खुद का अभिप्राय क्या है वह तो अलग वस्तु है, मगर वीतरागों के अभिप्राय को मान्य रखकर सारा काम करना वह व्यवहार चारित्र है। खुद से जितना बन पड़े उतना करना, किंतु वीतरागों के अभिप्राय को तय रखकर करना, कि वीतराग का अभिप्राय ऐसा है, उसके अनुसार ही चलते रहें, फिर खुद से जितना बन पड़े उतना करना, मगर वही व्यवहार चारित्र है।

और सच्चा चारित्र वह कहलाए कि चाहे खाता-पीता हो मगर तब भी ज्ञाता-द्रष्टा रहता हो वही सच्चा चारित्र है। (हरेक अवस्था में ज्ञाता-द्रष्टा रहे।) आत्मा निज स्वभाव में, ज्ञाता-द्रष्टा में आए वह सच्चा चारित्र। उस चारित्र के बिना मोक्ष नहीं है। आत्मा ज्ञाता-द्रष्टा है। 'आप' ज्ञाता-द्रष्टा पद में रहें वही चारित्र और वही मोक्ष का सही कारण। मोक्ष अर्थात् सर्व दुःखों से मुक्ति का कारण, ऐसा मोक्ष होने के सिवा निर्वाण होता नहीं है। निर्वाण

मतलब आत्यंतिक मुक्ति।

कुचारित्र को जानां वही चारित्र

प्रश्नकर्ता : मगर यह सब चारित्र में आना चाहिए न?

दादाश्री : चारित्र में लाने की ज़रूरत नहीं है। कुचारित्र को जानना, उसका नाम चारित्र। अच्छे चारित्र की मस्ती छा जाए वह कुचारित्र, वह भयंकर जोखिमदारी कहलाए।

प्रश्नकर्ता : तब फिर, हमें जो क्षायक सम्यक्त्व का अहंकार छा जाए तो वह क्या है?

दादाश्री : ज्ञान देने पर अहंकार तो नहीं आता लेकिन मस्ती में आ जाए, वह भी गलत है फिर।

प्रश्नकर्ता : आप तो फिर किसी तरह का आनंद ले सकें ऐसी जगह ही नहीं रहने देते हैं।

दादाश्री : आनंद लेना है तो अपने स्वरूप का आनंद लीजिए न! आभासी आनंद क्या लेना? मस्ती का आनंद थोड़े ही लिया जाता है? मस्ती यानी, ये जो लोग लौकिक धर्म को धर्म मानते हैं वे लोग मन की मस्ती में हैं, देह की मस्ती में हैं, वाणी की मस्ती में हैं, सारा जगत् ही मस्त होकर झूम रहा है। और वह मस्ती भी सारा दिन नहीं रहती। थोड़ी देर रहे फिर जैसे थे वैसे। फिर वापस मस्ती छा जाए। किंतु हमारे यहाँ तो (स्वरूपज्ञान के पश्चात्) मस्ती नहीं होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन हम तो अन्य सारी मस्तिओं को छोड़कर एक दादाजी के ज्ञान की मस्ती में रहते हैं।

दादाश्री : उसे मस्ती नहीं कहते। अच्छे चारित्र की मस्ती हो, वह उलटे नुकसान करती है। उसकी तुलना में कुचारित्र को 'जानना' फ़ायदा करे। कुचारित्र को 'जानना' वह आत्मचारित्र।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : हमने कुचारित्र 'जानां' तो सही, मगर क्या पॉजिटिव चारित्र के किसी भी प्रकार के आनंद के बगैर जीना है?

दादाश्री : 'जाने' उस समय आनंद होता ही है और 'करे' उस समय दुःख होता है (कर्त्तापन से दुःख होता है)।

प्रश्नकर्ता : यदि हमने हमारा कुचारित्र 'जानां' तो उस समय आनंद कैसे होगा? तब तो दुःख-वैराग्य होता है कि यह कुचारित्र 'जानां'।

दादाश्री : कुचारित्र का स्वभाव ही ऐसा है कि खुद का वह 'जानना' खो जाए। यदि कुचारित्र में ज्ञान हाज़िर रहे, यदि यहाँ तक की इतनी जागृति रही हो, तो 'जानना' वह तो सबसे ऊँचा चारित्र है।

प्रश्नकर्ता : किंतु 'चंदुभाई' टेढ़े हुए दिखाई दे उस समय दुःख तो होगा न?

दादाश्री : नहीं होता वह टेढ़ा। भगवान के यहाँ टेढ़ा-उलटा नहीं है, समाज में टेढ़ा-उलटा गिना जाता है। समाज क्या कहता है? यह टेढ़ा और यह सीधा, यह नालायक और यह लायक, ऐसे सभी द्वंद्वोंवाला समाज है। भगवान के यहाँ एक ही वस्तु है। सभी ज्ञेय ही हैं।

चारित्रमोह का नहीं होता तिरस्कार

क्षायक सम्यक्त्व हो और वर्तन टेढ़ा हो या सीधा हो, चाहे कैसा भी हो, फिर भी वह चारित्रमोह है। शास्त्र के विरुद्ध होने पर भी वह चारित्रमोह है और शास्त्र के अनुसार होने पर भी वह चारित्रमोह है। चारित्रमोह अर्थात् वह मोह के जैसा दिखाई देता है मगर वह चारित्रमोहनीय है। चारित्रमोहनीय मतलब खिसकाने से खिसकाया नहीं जाए और ग्रहण करने पर ग्रहण नहीं किया जाए, ऐसा मोह। उसका तो समभाव से निपटारा कर देना है क्योंकि राजी-खुशी से भरा हुआ माल है न! अब तिरस्कार नहीं कर

सकते। अब कड़वा लगता है, किंतु भरते समय तो 'मीठा ही है' ऐसा मानकर ही भरा था न? यानी सबका भरा हुआ माल अलग-अलग है, इन्होंने जो भरा था वह माल अलग, आपने जो भरा था वह माल भी अलग। यह कुछ नये तरह का ही माल है। सबका अलग-अलग।

वर्तन सीधा या टेढ़ा, किंतु वह है चारित्रमोह

आत्मज्ञान के पश्चात् मन की सारी क्रियाएँ, वाणी की सारी क्रियाएँ, देह की सारी क्रियाएँ, चाहे वे अच्छी हों या बुरी हों मगर वह सब चारित्रमोह है।

अतः मन के विचार क्या है यह आप समझ गए न? वह चारित्रमोह है। वाणी कठोर बोली जाए या कर्कश बोली जाए या स्याद्वाद बोली जाए, वह सब चारित्रमोह ही है। वर्तन सीधा हो या उलटा हो, वह सब चारित्रमोह ही है।

आज जो पुरानी आदतें अच्छी नहीं लगती हैं वह भी चारित्रमोह है और जो आदतें अच्छी लगती हैं वह भी चारित्रमोह है। जो सुविचार हैं, कुविचार हैं, वह भी चारित्रमोह है और खराब वाणी है वह भी चारित्रमोह है। इसलिए वाणी खराब होने पर डिस्क्रेज (हताश) नहीं हो जाना और अच्छी वाणी होने पर एलिवेट (उन्नत) नहीं हो जाना। दोनों का निपटारा कीजिए।

'उलटा-सुलटा' जैसा लपेटा वैसा खुले

प्रश्नकर्ता : दादाजी, दर्शनमोह के जाने के बाद जो चारित्रमोह है वह तो अपने आप डिस्चार्ज होता ही रहता है न?

दादाश्री : चारित्रमोह मतलब, जो मोह परिणमित हुआ है इसलिए वह पिघलता ही रहे अपनेआप, आपको कुछ करना नहीं पड़ता। आपको ज्ञाता-द्रष्टा रहना चाहिए। आप अपने स्वभाव में रहें तो आपको कोई हर्ज नहीं है। (स्वरूपज्ञान के पश्चात्)

दादावाणी

वकील वकालत करता हो तो इस पर लोग कहेंगे कि, 'वह वकील तो वकालत करता है, उसे चारित्रमोह कैसे कहा जाए?' किंतु मैं कहता हूँ कि उसे ही चारित्रमोह कहते हैं। जैसा लपेटा गया था वैसा खुलता है। टेढ़ा लपेटा था तो टेढ़ा निकला। सीधा लपेटा था तो सीधा निकला। वैसा लपेटा था इसलिए फिर वैसा ही निकले।

भगवान कितने समझदार थे! इसमें यदि अपवाद रखा होता तो मुसीबत खड़ी हो जाती न? इसलिए कहे, 'जैसा लपेटा, वैसा निकले।' वकालत करके जो केस झूठा था उसे सच्चा कर डाला। अरे, सच्चा कर डाला मगर उसने ऐसा लपेटा था, ऐसा मोह है। और उसमें भी वह खुद तो ज्ञाता-द्रष्टा है। जब आज उसकी मालिकी नहीं रखते हैं, फिर क्या जिम्मेदारी रही? मतलब ज्ञाता-द्रष्टा रहने पर फिर उलटा-सीधा कुछ नहीं है। आपने जैसा भरा हो वैसा। उलटा हो या सीधा हो, उलटा-सीधा यह जगत् की बुद्धि की अपेक्षा से है, समाज व्यवस्था की अपेक्षा से है, वर्ना भगवान के यहाँ तो, यह उलटा और यह सीधा ऐसा कुछ होता ही नहीं है। सीधा-टेढ़ा तो, हमें अनुकूल नहीं आया इसलिए उसे टेढ़ा कहा और हमें अनुकूल आया उसे सीधा कहा। हमें जो अनुकूल नहीं हो वह दूसरों को अनुकूल आता हो, यानी जो दूसरों को अनुकूल आता हो उसे हम टेढ़ा कैसे कह सकते हैं? वह तो हरएक का अपना-अपना हिसाब है। कल्पना ही है एक तरह की। टेढ़े और सीधे से अलग आपकी यह द्वंद्वातीत दशा हुई है। इसलिए आपको तो केवल देखना है, जो कुछ भी आया उसे देखना है, फिर चाहे वह कचरा हो या अच्छा हो। जैसी परीक्षा दी थी वैसे अंक आए हैं। उसे देखा करना। परीक्षा देते समय दादा से पूछकर नहीं दी थी। आपने अपनी मर्जी से दी थी!

प्रश्नकर्ता : मगर अब परीक्षा के बाद आपकी सिफ़ारिश चलेगी न? पास होने की, अंक देने की?

दादाश्री : नहीं। पहले जो किया था उसका परिणाम आज आ रहा है, उसे देखा करें। अब जो नया कर रहे हैं उसका दौर मेरे पास है। इतना ही मैंने कहा है। फिर आपको बंधन नहीं है, ऐसा मैं कहता हूँ।

चारित्रमोह मतलब, वह जो प्रारब्ध कहते हैं न! 'अब सिर्फ प्रारब्ध ही शेष रहा' ऐसा कहते हैं न, वह चारित्रमोह है। प्रारब्ध को भोगना शेष रहा, उसे ज्ञाता-द्रष्टा रहकर भोगिए।

प्रश्नकर्ता : यानी जो लपेटकर लाए हैं उसका हल आ रहा है उसे चारित्रमोह कहना है?

दादाश्री : हाँ। जो माल लपेटकर लाए हैं न वह अब खुल रहा है, उसे चारित्रमोह कहते हैं। भगवान कहते हैं, 'जो खुल रहा है उसमें फिर से राग-द्वेष नहीं करना और ज्ञाता-द्रष्टा रहना।'

जानकार जो है, वही आत्मा

प्रश्नकर्ता : जब कोई काम सामने आता है, तब उसके पहले जागृति होती है और बाद में वह सब चला जाता है। कार्य के समय उसमें मग्न हो जाना पड़ता है और फिर वह कार्य पूरा होने के बाद ज्ञान की बातें शुरू होती हैं...

दादाश्री : वहाँ आत्मा मग्न होता ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो उसमें जागृति कैसी रखनी चाहिए?

दादाश्री : वहाँ अहंकार-बुद्धि की जागृति होती है।

प्रश्नकर्ता : मतलब बिना मग्न हुए क्या वह काम पूरा नहीं होता?

दादाश्री : वहाँ बुद्धि कार्यरत होती है। खुद को मन में ऐसा लगे कि 'मैं कार्यरत हुआ हूँ।' इसलिए ऐसा असर होता है।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : यानी वहाँ पर कैसी जागृति रखनी चाहिए?

दादाश्री : वहाँ तो जानकार रहना चाहिए, कि बुद्धि कार्यरत हुई और गाड़ी चल पड़ी और फिर वह कार्य अच्छा हुआ या बुरा हुआ यह जिसने जाना, वह आत्मा है। यदि वह कहता है कि 'मैं कार्यरत हुआ' तो फिर अच्छा-बुरा किसने जाना?

प्रश्नकर्ता : बराबर है। मतलब उस पूरे व्यवहार के समय खुद जानकार ही था?

दादाश्री : जानकार जो रहता है वही आत्मा है। कार्य में जो मग्न हुआ वह आत्मा नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : वह मग्न हुआ हो ऐसा लगता है, तो वह कौन है?

दादाश्री : वह बुद्धि और अहंकार।

प्रश्नकर्ता : मतलब क्या वहाँ ऐसा समझ लेना है कि हकीकत में 'हम' उसमें घुसते नहीं हैं?

दादाश्री : ऐसा ही समझना है। क्योंकि फिर यदि आप उसे पूछें कि 'कार्य सीधा हुआ या टेढ़ा?' तब वह जवाब देगा कि, 'सीधा हुआ।' और, घुसनेवाले को यह पता नहीं चलता। अच्छा हुआ या बुरा हुआ, यह घुसनेवाले को मालूम नहीं पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : मगर, जिस क्षण व्यवहार हो रहा है उसी क्षण ऐसे जागृत रहना, यह दोनों एट ए टाइम हो जाता है या फिर दोनों के बीच कोई अंतर रहता है?

दादाश्री : एट ए टाइम ही होता है, अंतर कोई होता ही नहीं है। उसकी (अहंकार की) मान्यता में फर्क पड़ता है। और, उस मान्यता में फर्क हुआ यह भी जाना किस ने? यह जो जानता है (जिसने जाना), वह आत्मा है। जो घुस गया वह आत्मा नहीं है। एकाकार हो गया उसका नाम आत्मा नहीं है। आत्मा कभी अहंकार हो नहीं सकता, वह तो जानकार

के तौर पर रहता है न! आत्मा मुक्त ही रहता है, जानकार ही रहता है। घुस गया, ऐसा लगा हो तो फिर बाद में प्रतिक्रमण करके फिर से वापस आ जाना चाहिए कि 'मेरी भूल हो गई।' किंतु, घुसता ही नहीं। पहले की यह ऐसी आदत थी। उसकी वह आदत अभी भी चालू है।

नहीं बोल सकते 'अब हर्ज नहीं'

कई लोगों के बाह्याचार अच्छे होते हैं मगर अंदर से बहुत ही बुरे होते हैं। हमारे महात्माओं के बाह्याचार भले ही बुरे हों फिर भी अंदर से कैसे सयाने होते हैं।

प्रश्नकर्ता : यह बात सैद्धांतिक है मगर कभी-कभी ऐसा होता है कि दादाजी का यह वचन कि 'हमें अब आचार से क्या काम है, अब तो अंदर का ही देखा करो', इसे एकांतिक रूप से पकड़ लेते हैं। क्या यह बराबर है?

दादाश्री : उसे पकड़ लेते हैं, बस। उसे पकड़ लेने की ज़रूरत नहीं है, किंतु आपको समझने की ज़रूरत है कि कभी ऐसा हो जाए तो आपको भय नहीं रखना है। मगर यदि पकड़ लिया तो आपका कच्चा रह जाएगा।

प्रश्नकर्ता : पकड़ लेते हैं और उसके बचाव में बैठ जाते हैं।

दादाश्री : नहीं, बचाव में नहीं बैठ सकते। जैसे कि, उदाहरण के तौर पर, कुँए में नहीं पड़ना है ऐसा आपका दृढ़ निश्चय हमेशा होता है न? यदि यहाँ पर सौ-दो सौ कुँए हों और वहाँ उस रास्ते से आपका आना-जाना होता हो तो अँधेरे में भी उसमें आप गिर नहीं जाते। क्योंकि आपका निश्चय है कि चाहे कुछ भी हो जाए लेकिन मुझे कुँए में गिरना नहीं है, इसलिए कभी नहीं गिरते। लेकिन यदि आप कुँए का बचाव करेंगे तो गिर पड़ेंगे। आपका निश्चय तो होना चाहिए न। मैं तो यह किस लिए कहा

करता हूँ? कि आप पकड़कर बैठ जाएँ इसलिए नहीं कहता, आपको भय रहित करने के लिए कहता हूँ। आपके बाह्याचार ऐसे हैं, टेढ़े हैं तो उसमें हर्ज मत रखना। किंतु उसका मतलब यह नहीं है कि आप उसे पकड़कर बैठ जाएँ। आपको तो ऐसा ही रखना है कि 'यह होना ही नहीं चाहिए।' फिर भी यदि हो गया, तो उसे लेट गो करते हैं। हमने क्या कहा है? 'व्यवस्थित' (सायंटिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स) किसे कहते हैं? कि आँखें खुली रखकर गाड़ी चलाना और सावधानी के साथ चलाना, और ऐसा करने पर भी फिर टकरा गई तो 'व्यवस्थित' है। फिर आपसे गुनाह हो गया तो उसमें हर्ज नहीं है, वह 'व्यवस्थित' है, मगर यह सावधानीपूर्वक होना चाहिए।

इस एक जन्म के लिए मैंने 'व्यवस्थित' दे दिया है। 'व्यवस्थित', मतलब कोई डर नहीं रखा है। जो होनेवाला ही है, जितना-जितना डिसाइडेड है, वह होनेवाला है। मगर आप अभी (होने से पहले) नहीं बोल सकते। मगर डिसाइडेड (निश्चित) है। उसमें किंचित् मात्र फेरफार होनेवाला नहीं है, केवल आप भय रहित होकर जीएँ। यह ज्ञान निर्भय है। उसकी गारन्टी मेरी है। अर्थात् भय रखने का अर्थ ही नहीं है, भय रखने पर वह न तो कम होनेवाला है और न ही बढ़ जानेवाला है। भय रखेंगे उतना आप घाटे में रहेंगे। कब एक्सिडन्ट हो जाए और कब खतम हो जाएँ उसका पता है आपको? तब वहाँ क्यों भय नहीं रखते? उसका भय नहीं रखना चाहिए क्या?

हमारे दोष के कारण सामनेवाला टेढ़ा

सेठजी हमें इनाम देते हों तो वह हमारा 'व्यवस्थित' है, और जब हमारा 'व्यवस्थित' विपरीत आए तब सेठजी के मन में ऐसा विचार आए कि 'इस बार इसकी पगार काट लेनी चाहिए।' सेठजी के पगार काट लेने पर हम सोचें कि, 'सेठजी बुरे

आदमी हैं, ऐसा सेठ मुझे कहाँ से मिला?' मगर ऐसा गुना करना मनुष्य को आता नहीं कि यदि वह बुरा होता तो वह पहले इनाम क्यों दिया करता था? इसलिए कहीं कोई भूल है। हिसाब लगाने में कहीं कोई चूक हो रही है। सेठजी टेढ़े नहीं है, यह तो 'व्यवस्थित' बदलता है। गेहूँ के संग्रह करनेवाले टेढ़े नहीं हैं। हमें गेहूँ नहीं मिलते हैं तो हमारा 'व्यवस्थित' टेढ़ा है। इसलिए हम कहते हैं कि 'जो भुगते उसकी भूल।' वे गेहूँ का संग्रह करनेवाले तो जब पकड़े जाएँगे तब उनकी भूल कहलाएगी, वे तब गुनहगार होंगे। आज पकड़े नहीं गए हैं। अभी तो वे गाड़ीओं में घूमते हैं। अभी तो हम भुगत रहे हैं, इसलिए 'जो भुगते उसकी भूल।'

गालियाँ खाई वह भी 'व्यवस्थित', मार खाई वह भी 'व्यवस्थित' और इनाम मिला वह भी 'व्यवस्थित'। 'व्यवस्थित' कहने का हमारा भावार्थ क्या है? कि आप करने गए सीधा और हो गया उलटा तो उसे 'व्यवस्थित' कहना। ताकि फिर उसके लिए आर्तध्यान-रौद्रध्यान नहीं हो।

प्रश्नकर्ता : यह वाणी-वर्तन-विचार जो भी होता है, क्या वह सबकुछ 'व्यवस्थित' के हिसाब से ही होता है?

दादाश्री : उसे मैं भी 'व्यवस्थित' समझता हूँ और आपको भी उसे 'व्यवस्थित' ही समझना है। कोई यदि कहे कि 'आप पक्षपाती हैं', तब भी मुझ पर उसका कोई असर नहीं होता है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि 'वह 'व्यवस्थित' है, वह व्यक्ति जो कुछ बोलता है वह 'व्यवस्थित' है।' इसलिए हम पर उसका असर होगा ही नहीं न! हम तो तुरंत ही समझ जाएँ कि, 'यह (हमारी) वाणी भी 'व्यवस्थित' (के अधीन) है। तब क्या दूसरों की वाणी 'व्यवस्थित' (के अधीन) नहीं है?'

मतलब हमें उसका असर नहीं होता है। हम उसे बाजू पर रख देते हैं। हम ऐसा भी कहें कि

दादावाणी

‘बराबर है, करैक्ट है।’ क्योंकि जैसा व्यवहार वह लपेटकर लाया था, ऐसा वह बोलता है। उसमें कुछ नया नहीं है। और व्यवहार तो व्यवहार ही है। उससे हमारा कोई लेना-देना नहीं है। फिर बिना वज़ह क्या झँझट? उसे तो हम अब छोड़ चुके हैं। हमें उससे किनारा करके दूसरे गाँव जाना है, अब उसके साथ हमारा लेना-देना नहीं है, तो उसमें फिर हस्तक्षेप करके क्या करना है?

टेढ़ों के साथ ऐडजस्ट होकर निकालिए हल

जिसे ‘ऐडजस्ट’ होने की कला हस्तगत हुई वह दुनिया से अलग होकर मोक्ष की ओर मुड़ा। ‘ऐडजस्टमेन्ट’ हुआ, उसी का नाम ज्ञान। जो ‘ऐडजस्टमेन्ट’ सीख गया वह पार हुआ। जो भुगतना है वह तो भुगतना ही है, मगर जिसे ‘ऐडजस्टमेन्ट’ लेना आया उसे हर्ज नहीं होता, हिसाब पूरा हो जाए। यदि लुटेरे मिल जाएँ और उनके साथ ‘डिस्पैडजस्ट’ होंगे तो वे मारेंगे। उसके बजाय हम तय करें कि उनके साथ ‘ऐडजस्ट’ होकर काम लेना है, फिर उनसे पूछें कि, ‘भैया आपकी क्या इच्छा है? देखो, हम तो यात्रा करने निकले हैं।’ ऐसा करके उनके साथ ‘ऐडजस्ट’ हो जाएँ।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में रहना है इसलिए ‘ऐडजस्टमेन्ट’ एकपक्षीय तो नहीं होना चाहिए न?

दादाश्री : व्यवहार तो वह कहलाए कि हमारे ‘ऐडजस्ट’ होने पर पड़ोसी भी कहें कि, ‘घर-घर में झगड़े हैं, मगर यह एक घर ऐसा है जहाँ झगड़ा नहीं है।’ उसका व्यवहार सबसे अच्छा कहलाए। जिसके साथ रास नहीं आया वहाँ पर ही शक्ति का संयोजन करना है, रास आता है वहाँ तो शक्ति है ही। रास नहीं आता वह तो कमजोरी है। मुझे हरएक के साथ क्यों रास आता है? जितने ‘ऐडजस्टमेन्ट’ लेंगे उतनी शक्तियाँ बढ़ेंगी और अशक्तियाँ चूर होंगी। सच्ची समझदारी तो अन्य सभी समझदारियों को ताले लगने पर ही आएगी।

सीधे लोगों के साथ तो हरकोई ‘ऐडजस्ट’ होता है मगर टेढ़े, कठोर, कड़े सभी लोगों के साथ ‘ऐडजस्ट’ होना आया तो बात बन गई। चाहे कैसा भी मनुष्य क्यों न हो, मगर उसके साथ ‘ऐडजस्टमेन्ट’ लेना आया और दिमाग बेकाबू नहीं हुआ, तो काम का। भड़कने से काम नहीं होगा। जगत् की कोई भी वस्तु हमें ‘फिट’ नहीं होनेवाली, हम उसे ‘फिट’ हो जाएँ, तो यह दुनिया सुंदर है। यदि उसे ‘फिट’ करने जाएँ तो दुनिया टेढ़ी है। इसलिए ‘ऐडजस्ट एवरीव्हेर’ (सर्वत्र समायोजन)। हम उसके साथ ‘फिट’ हो जाएँ तो कोई हर्ज नहीं है।

मुख्य वस्तु ‘ऐडजस्टमेन्ट’ है। ‘हाँ’ से मुक्ति है। हम यदि ‘हाँ’ कहें तब भी ‘व्यवस्थित’ के बाहर तो कुछ होनेवाला नहीं है न? लेकिन यदि ‘ना’ कही तो महा मुसीबत है!

वीतराग राह पर ही आए किनारा

‘ज्ञानी’ तो, सामनेवाला टेढ़ा होने पर भी उसके साथ ‘ऐडजस्ट’ हो जाएँ। यदि ‘ज्ञानी पुरुष’ का निरीक्षण करें, उनके कहे अनुसार चलें, तो हर तरह के ‘ऐडजस्टमेन्ट्स’ लेना आ जाए। अतः इसके पीछे जो ‘साइंस’ है वह कहता है कि वीतराग हो जाइए, राग-द्वेष नहीं करें। यह तो अंदर कुछ आसक्ति रह जाती है, इसलिए मार पड़ती है। व्यवहार में जो एकपक्षीय, निःस्पृह हो गए होते हैं वे टेढ़े कहलाते हैं। यदि हमें उसकी ज़रूरत हो, तो फिर सामनेवाला टेढ़ा हो तो उसे मना लेना पड़े। स्टेशन पर यदि मजदूर की ज़रूरत हो और वह आनाकानी करता हो तो उसे चार आने कम-ज्यादा देकर भी मना लेना चाहिए और यदि नहीं मनाते तो फिर सामान हमें ही उठाना पड़ेगा न?

इतना ही पहचानना है कि यह ‘मशीनरी’ कैसी है, यदि उसका ‘फ्युज़’ उड़ जाए तो ‘फ्युज़’ कैसे बिठाना है। सामनेवाले की प्रकृति के साथ ‘ऐडजस्ट’ होते आना चाहिए। मुझसे यदि सामनेवाले

दादावाणी

का 'फ्युज़' उड़ जाए तो भी मेरा उसके साथ 'ऐडजस्टमेन्ट' होता है। मगर सामनेवाले का 'ऐडजस्टमेन्ट' टूटने पर क्या होता है? 'फ्युज़' गया, मतलब वह फिर अँधेरे में दीवार से टकराए, दरवाज़े से टकराए, मगर वायर टूटता नहीं है, इसलिए यदि कोई फिर से 'फ्युज़' डाल दे तो फिर वह राह पर आ जाए, किंतु तब तक वह उलझता रहे।

तो यहाँ सीधे क्यों नहीं रह पाएँ?

प्रश्नकर्ता : संसार में रहने पर कुछ जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं और जिम्मेदारियाँ अदा करना यह एक धर्म है। उस धर्म को निभाते समय कारणवश या अकारणवश कटु वचन बोलने पड़ते हैं, तो क्या वह पाप है? क्या वह दोष है?

दादाश्री : ऐसा है न कटु वचन बोलते समय आपका चेहरा कैसा हो जाता है? गुलाब के समान हो जाता है न? यदि आपके चेहरे के हावभाव बिगड़ जाए तो समझना कि पाप लगा। खुद का चेहरा बिगड़ जाए ऐसी वाणी निकली तो वहाँ पर जान लेना कि पाप लगा। कटु वचन नहीं बोलने चाहिए। धीरे से, आहिस्ता से बोलिए। थोड़े वाक्य बोलें मगर आहिस्ता से समझ के साथ कहें, प्रेम रखिए, तो एक दिन जीत पाएँगे। कड़वाहट से नहीं जीत सकते। ऐसा करने से सामनेवाला व्यक्ति आपके मुँह लगेगा और उलटे परिणाम बाँधेगा। आपका लड़का यदि कम उम्र का रहा तो उलटे परिणाम बाँधेगा कि, 'अभी मैं कम उम्र का हूँ इसलिए ऐसे धमकाते हैं, बड़ा होने पर देख लूँगा।' ऐसे परिणाम अंदर बाँधेगा। इसलिए ऐसा नहीं करें, उसे समझाइए। एक दिन प्रेम की जीत होगी। दो दिन में ही उसका फल नहीं आएगा, दस दिन, पंद्रह दिन, महीनाभर प्रेम रखा करें। फिर देखिए इस प्रेम का क्या फल आता है, देखिए तो सही। आपको पसंद आई यह बात? कड़वे वचन बोलने पर खुद का चेहरा बिगड़ नहीं जाता क्या?

प्रश्नकर्ता : कईबार हमारे समझाने पर भी वह नहीं समझे तो क्या करना?

दादाश्री : समझाने की ज़रूरत ही नहीं है। प्रेम रखिए। और फिर भी आप उसे धीरे-धीरे समझदारी दे सकते हैं। क्या अपने पड़ोसी को भी हम कटु वचन बोलते हैं कभी?

प्रश्नकर्ता : मगर ऐसी धीरज होनी चाहिए न?

दादाश्री : मान लीजिए अभी पहाड़ पर से ढेला आकर आपके सिर पर गिरा, तब आप ऊपर देखने के बाद किस पर क्रोध करेंगे? वहाँ पर आप शांत रहेंगे न? कोई दिखाई नहीं दिया इसलिए आपने मान लिया कि किसी ने फेंका नहीं है, अपनेआप ही गिरा है, यानी उसका गुनाह हम नहीं गिनते। तब, जब किसी ने फेंका हो, तो वह भी अपने आप ही गिरने के समान है। वहाँ, फेंकनेवाला व्यक्ति दिखाई देता है, केवल उतना ही है। किंतु वह अपने आप गिरने के समान ही है। आपके ही सारे हिसाब चुकता होते हैं। इस दुनिया में सारे हिसाब चुकता हो रहे हैं। नये हिसाब बंध रहे हैं और पुराने हिसाब चुकता हो रहे हैं। इसलिए बच्चों के साथ सीधा बोलना, अच्छी भाषा में बोलना।

पौधा बोया हो, तो फिर आप उसके साथ लड़ते मत रहिए कि 'देख तू टेढ़ा मत होना, फूल बड़े आने चाहिए, आदि', उसे ऐसा-वैसा मत कहा कीजिए। हमें तो सिर्फ उसे खाद और पानी देते रहना है। यदि गुलाब के पौधे पर इन बातों का असर होता है तब ये बच्चे तो मनुष्य हैं। उन्हें माँ-बाप पीटते भी है, मारते भी हैं।

दुनिया हमेशा प्रेम से ही सुधरती है। उसके अलावा दूसरा कोई उपाय ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : हम प्रेम रखें और सामनेवाला मनुष्य नहीं समझे, हमारा प्रेम समझ नहीं पाए तो फिर हम क्या करें?

दादावाणी

दादाश्री : क्या करना? शांत रहना है हमें, शांत रहें, दूसरा क्या करें? मार थोड़े ही सकते हैं उसे?

प्रश्नकर्ता : मगर हम उस कक्षा तक नहीं पहुँचे हैं कि शांत रह सकें?

दादाश्री : तो फिर हम उस समय (उस कक्षा तक पहुँचने के लिए) छलाँग लगाएँ! दूसरा क्या करना? जब पुलिसवाला धमकाता है तब क्यों शांत रहते हैं?

प्रश्नकर्ता : पुलिसवाले की तो ऑथोरिटी है, उसके पास सत्ता है।

दादाश्री : तो हम उन्हें (बच्चों को) ऑथोराइज़ (अधिकृत) करें। पुलिसवालों के सामने सीधे रहते हैं, तो क्या यहाँ पर सीधे नहीं रह सकते?

मूल में भूल 'ऑर्गेनाइज़र' की

प्रश्नकर्ता : मेरी जबान पर काबू रहे ऐसा कुछ कीजिए न? क्योंकि मैं ज्यादा बोलता हूँ।

दादाश्री : मैं भी तो सारा दिन बोला करता हूँ। आपके बोलने में ऐसा कोई वाक्य तो नहीं होता न, कि जो सुननेवाले को दुःखदायी हो जाए? यदि ऐसा वाक्य नहीं हो, तब तो बोलना खराब नहीं कहलाता।

प्रश्नकर्ता : यह जबान ऐसी है कि घड़ी में ऐसा बोल दे, घड़ी में वैसा बोल दे।

दादाश्री : इस जबान में ऐसा कोई दोष नहीं है। यह जबान तो अंदर जो बत्तीस दाँत है उसके साथ रहा करती है। रात-दिन काम करती है मगर लड़ती नहीं है, झगड़ती नहीं है। यानी जबान तो बहुत अच्छी है, मगर हम ही टेढ़े हैं। हम ऑर्गेनाइज़र (संचालक) टेढ़े हैं। भूल हमारी है।

नहीं रखना चलन अपना

घर में हम अपना चलन (सत्ता, प्रचलन) नहीं रखें। जो मनुष्य चलण रखता है उसे भटकना पड़ता है। हमने भी हीराबा से कह दिया था कि, 'हम ना चलनेवाला सिक्का हैं।' क्योंकि हमें भटकना गवारा नहीं है न! घर में चलन रखने पर तो टकराव होगा न? हमारे पैर दुखते हों और पत्नी पैर दबाती हो, उस समय कोई आकर देखे और कहे कि, 'अहोहो! आपका तो घर में बहुत अच्छा चलन है।' तब हम कहें कि 'नहीं, चलन उसका ही चलता है।' मगर यदि आपने ऐसा कहा कि 'हाँ, मेरा ही चलन है', तो वह पैर दबाना छोड़ देगी। उसके बजाय हम कहें कि 'नहीं, उसका ही चलन है।'

प्रश्नकर्ता : क्या इसे मसका लगाना नहीं कहते?

दादाश्री : नहीं, वह 'स्ट्रेइट वे' (सीधा रास्ता) कहलाए और दूसरे टेढ़े-मेढ़े रास्ते कहलाएँ। इस कलियुग में मैं आपको यह सुखी होने का रास्ता दिखलाता हूँ, वह अलग ही रास्ता है।

हम ही सीधे हो जाएँ तो?

प्रश्नकर्ता : किंतु ऐसा 'ऐडजस्टमेन्ट' लिया नहीं जाता है, ज़रा अकुलाहट हो जाती है, व्याकुलता आ जाती है।

दादाश्री : यह ज्ञान तो मुझे पचासवें साल में हुआ, मगर मैं तो चालीस साल की उम्र में कढ़ी में पानी डाला करता था, जब कढ़ी खारी हो जाती तब। इसे एक बार हीराबा ने देख लिया और कहने लगी, 'अरे, आपने पानी डाला?' मैंने कहा, 'अब नहीं डालूँगा।' मैं समझ लेता कि चूल्हे पर भी पानी डालकर ही नमक को कम करते हैं न? हम बिना चूल्हे के फीकी करें। और यदि ऐसा नहीं करना हो तो मैं ऐसा करता कि थाली में थोड़ा हलवा या कोई मीठी चीज़ पड़ी हो, तो उसे कढ़ी में डालकर मसल

दादावाणी

देता। इस प्रकार, कैसे भी करके कढ़ी को खाने लायक कर लेता। फिर शक्कर-गुड़ कुछ नहीं माँगता। इसलिए किसी को पता नहीं चलता कि कढ़ी खारी हो गई है। कुछ कहना-करना नहीं। हमारे यहाँ सेवा में जो होते हैं उनमें से किसी से भी आप पूछेंगे तो वह कहेगा, 'नहीं, दादाजी कभी कुछ बोले नहीं हैं।' मैं किस लिए बोलूँ? बोलनेवाले हैं न सभी? सभी होशियार हैं न?

आप यदि पत्नी को सुनाएँ तो फिर स्त्रियाँ अंदर-अंदर कहेगी, 'वे कलमूँहे ऐसे ही हैं।' उन्हें ऐसे बहुत से शब्द आते हैं मगर वे हमारे सामने कहती नहीं है। अतः सब मिलकर हमें ऐसा अपयश दें, उसके बजाय हम ही क्यों न सीधे रहें! सीधे हो जाइए न! कढ़ी किस आधार पर खारी हुई? तब कहे, 'आधार के आधार पर आपकी थाली में ऐसी आई है। यों ही नहीं आई है, निराधार नहीं आई है।' किंतु लोगों को ऐसी समझ नहीं होने के कारण वे कहें कि, 'उसने कढ़ी खारी बनाई।' यह तो पागलपन है। क्या वह जान-बूझकर ऐसा करती होगी? उसे सौ रुपये देने पर भी वह कढ़ी खराब नहीं होने देगी। कहेगी, 'यदि मैं खाना खराब कर दूँगी तो मेरे बच्चों का क्या होगा?' अर्थात्, किसी आधार पर कढ़ी खारी बनती है।

सारे दुःख खुद के टेढ़े होने के

यानी अब, घर में कढ़ी खारी होने पर आप शोर मत मचाना कि, 'कढ़ी खारी क्यों हो गई?' कढ़ी खारी होने पर लोग क्या करते हैं? शोर मचाते हैं। क्या यह मनुष्य होने की निशानी है? खुद की पत्नी ने बनाई हो तो भी उसमें दोष निकाले। मतलब, तुझे पति होना नहीं आया! खुद की पत्नी ने बनाई है और उसमें भी तूने कमी निकाली! तब फिर और कहाँ सीधा रहेगा? और उपर से कहता फिर 'माय वाइफ'। अरे! तेरी वाइफ है तो गलती क्यों निकालता है? फिर दोनों के बीच ऐसी लड़ाइयाँ चलती रहे।

और जीवन का क्या? युज़्लेस (व्यर्थ) कर डाला है जीवन को। यानी, टेढ़े होने से ही सारे दुःख आए हैं, सीधे होने की ज़रूरत है।

किसी की भूल निकालनी नहीं चाहिए। पति को पत्नी की भूल नहीं निकालनी चाहिए और पत्नी को पति की भूल नहीं निकालनी चाहिए। साधारण चेतावनी देना, किंतु वह भी भोजन कर लेने के बाद। लेकिन लोग तो खाते समय ही बिगड़ते हैं। इसलिए फिर भोजन में यदि आम का रस और रोटी रही तो भी मज़ा नहीं आता। बात आपकी समझ में आती है? मेरी बात को जागृति में लेनी चाहिए या नहीं लेनी चाहिए? घर में बिलकुल शांति रहनी चाहिए। अशांति होनी ही नहीं चाहिए। अशांति करने से अगले जन्म का नुकसान करते हैं, अगला जन्म बँधता है। पत्नी के साथ बैर बँधता है।

हमारे घर में तो कोई जानता तक नहीं कि 'दादाजी' को यह पसंद है और यह नहीं पसंद है। खाना बनाना क्या वह बनानेवाले के हाथ का खेल है? वह तो खानेवाले के 'व्यवस्थित' के हिसाब से थाली में आता है, उसमें दखल नहीं देनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : वह बराबर है, कबूल है। अब हमारी समझ में आ गया, बराबर ऐडजस्ट हो गया।

दादाश्री : वर्ना बिना वज़ह हम ऐसा करेंगे तो कढ़ी बिगड़ जाएगी। क्योंकि, यदि उसके दिमाग का ठिकाना नहीं रहा और कढ़ी में नमक ज्यादा पड़ गया तो हमें चूपचाप खा लेनी पड़े। ऐसा करने के बजाय हम कहें कि, 'बहुत अच्छी है।' मुँह से ऐसा बोलने में हर्ज क्या है?

प्रश्नकर्ता : और 'दादाजी' यदि ऐसा कह दिया हो कि खारी है तो दूसरे दिन फीकी हो जाए क्योंकि वह फिर इमोशनल हो जाएगी।

दादाश्री : बात सही है, इसलिए तो मैं कभी खाते समय बोलता नहीं हूँ, इसका कारण यही है।

दादावाणी

यदि मैं कहूँ कि नमक ज़रा ज्यादा है तो दूसरे दिन नमक कम डालेंगे। उसके बजाय बोलना ही नहीं ताकि अपने आप रेग्युलर रहेगा। मैं कभी भी नहीं बोला हूँ।

आप कहें कि यह खराब है और यह अच्छा है। आप इस प्रकार ऑपिनियन (अभिप्राय) दें अर्थात् मन की रचना हुई। ऑपिनियन मत देना। यों ही जो करना चाहें वह कीजिए न! यदि कढ़ी खारी है, तो नहीं खाना चाहें तो नहीं खाएँ, मगर हमें ऑपिनियन नहीं देना चाहिए वरना मन खड़ा होगा, सँभालना। यानी ऑपिनियन नहीं रहा तो मन बंद हो जाएगा, यह बात सही है।

अभिप्राय की ही झँझट है सारी

जिसे किसी भी प्रकार का अभिप्राय नहीं है उसे मन नहीं होता। यह अच्छा और यह खोटा, यह ऐसा और यह वैसा, फलौं भाई अच्छे, और यह बुरे, आदि ऐसे अभिप्रायों से मन का गठन हुआ है। और वे अभिप्राय छूटते नहीं हैं न फिर! अब ऐसे अभिप्राय नये सिरे से फिर से करें तो फिर नयी उलझनें खड़ी होती रहें।

खाइए, किंतु अभिप्राय नहीं रखें। अभिप्राय ऐसा रखें कि यह नहीं खाना चाहिए। ऐसा अभिप्राय नहीं रखना चाहिए कि यह अच्छा है और यह कड़वा है। ऐसे अभिप्राय खड़े हुए कि मन उत्पन्न हुआ।

अभिप्राय को लेकर ही तो बहू को ब्याहकर लाता है मगर फिर पसंद नहीं आती, उसका क्या कारण है? तब कहे, उसका अभिप्राय। कहेगा, 'बराबर नहीं है, यह बहुत मोटी है।' जब लाए तब पतली थी, फिर मोटी नहीं हो जाती क्या? लेकिन फिर ऊबता रहे, अभिप्राय को लेकर ही ऐसा होता है। अभिप्राय का ही दुःख है न, वरना, यदि ऐसा अभिप्राय रखते कि यह पतली, निर्बल के बजाय मोटी होती तो अच्छा होता, तो फिर झँझट ही नहीं थी न! कुछ लोगों को

दुबला-पतला मनुष्य अच्छा नहीं लगता। अर्थात्, अभिप्राय की ही सारी झँझट है!

प्रश्नकर्ता : किसी के लिए हमारा कुछ अभिप्राय हो जाए तो उसका परिणाम क्या आता है?

दादाश्री : फँसाव! और क्या? हमें क्या करना है ऑपिनियन बाँधकर? हमारा अधिकार ही क्या है? फिर उसका फल फँसाव आता है। खराब अभिप्राय हो गया तब भी फँसाव और अच्छा रखने पर भी फँसाव।

जिंदगी में पछतावा ही नहीं हुआ कभी

शादी की, मतलब 'प्रोमिस' किया हमने, शादी में किए गए 'प्रोमिस' तो सब निभाने ही चाहिए न हमें? कॉन्ट्रैक्ट किया है तो उसका पालन करना ही पड़ेगा न! मैं भी तो पालन करता ही हूँ न! छुटकारा ही नहीं है न! और स्त्री क्या दुःखदायी है? अरे! तेरी अक्ल दुःखदायी है, तू टेढ़ा है तो उसमें स्त्री क्या करे? यदि जीवन जीना आया, तो कभी पछतावा ही नहीं करना पड़ता। मुझे जिंदगी में कभी पछतावा नहीं करना पड़ा है। सारी जिंदगी कॉन्ट्रैक्ट का धंधा किया तब भी पछतावा नहीं किया है। चालीस साल भागीदार के साथ रहे मगर कभी मतभेद नहीं हुआ है, एक मतभेद नहीं हुआ है।

प्रश्नकर्ता : मतभेद नहीं होने देने का आप कौन-सा रास्ता दिखलाते हैं?

दादाश्री : 'ऐडजस्ट एवरीव्हेर' होना, मैं यही रास्ता दिखलाता हूँ। पत्नी कहे कि, 'खीचड़ी पकाई है।' तो आपको 'ऐडजस्ट' हो जाना चाहिए। और जब आप कहें कि, 'अभी मुझे बाहर जाना है, सत्संग में जाना है' तो उसे 'ऐडजस्ट' हो जाना चाहिए। जो पहले बोले, दूसरे व्यक्ति को उसे 'ऐडजस्ट' हो जाना है।

प्रश्नकर्ता : तब फिर पहले बोलने के लिए मारपीट होगी।

दादावाणी

दादाश्री : हाँ, ऐसा करना। मारपीट करना, मगर उसे ऐडजस्ट हो जाना। क्योंकि तेरे हाथ में सत्ता नहीं है। वह सत्ता किस के हाथ में है यह मैं जानता हूँ। मतलब इसमें 'ऐडजस्ट' हो जाने में कुछ हर्ज है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, ज़रा-सा भी नहीं।

दादाश्री : बहन, क्या तुझे हर्ज है?

प्रश्नकर्ता : नहीं जी।

दादाश्री : तो फिर उसका निपटारा कर लीजिए न! यदि वह पहले कहे कि, 'आज प्याज़ के पकौड़े, लड्डू, सब्जी आदि सब बनाना', तो आप 'ऐडजस्ट' हो जाएँ। और यदि आप कहें कि, 'आज जल्दी सो जाना है', तो उसे ऐडजस्ट हो जाना चाहिए। फिर उसे यदि किसी मित्र के यहाँ जाना हो तो भी मुलतवी करके जल्दी सो जाना। क्योंकि मित्र के साथ झँझट होगी तो देखा जाएगा, मगर यहाँ झँझट नहीं होने देना। लोग तो मित्र के साथ अच्छा रखने हेतु, पहले घर में झँझट खड़ी करते हैं। अर्थात् जो पहले बोले उसे हम 'ऐडजस्ट' हो जाएँ।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसे आठ बजे किसी मीटींग में जाना हो और उसकी पत्नी कहे कि 'अब सो जाइए', तो वह क्या करे?

दादाश्री : ऐसी कल्पनाएँ मत करना। कुदरत का ऐसा नियम है कि, 'व्हेर धेर इज़ ए वील, धेर इज़ ए वे' (जहाँ चाह वहाँ राह)। कल्पना करेंगे तो बिगड़ेगा। उस दिन को वह यही कहती थी कि, 'आप जल्दी जाइए, मैं गराज तक छोड़ने आऊँगी।' फिर? यानी कल्पना करने से ही सब बिगड़ता है।

अंततः भूल तो मिटानी होगी न?

प्रश्नकर्ता : शास्त्रों में ऐसा लिखा गया है कि 'स्त्री पति को ही परमेश्वर माने और उसकी आज्ञा में रहकर ही सब करे।' तो इस काल में उसका

पालन कैसे करना?

दादाश्री : पति यदि राम समान हो तो हमें सीता होना चाहिए। लेकिन पति यदि टेढ़ा हुआ हो तो हम टेढ़े नहीं होंगे तो कैसे चलेगा? सीधा रहा जाए तो उत्तम है, किंतु सीधा रह नहीं पाते न! लोग (कषायों के) घूँसे मार-मार करें तो मनुष्य सीधा कैसे रह सकेगा? फिर पत्नी बेचारी क्या करे? पति को पतिधर्म निभाना चाहिए और पत्नी को पत्नीधर्म निभाना चाहिए। या फिर पति की थोड़ी भूल हो तो निबाह ले, वह पत्नी कहलाए।

आपकी समझ में आया कि भूल कहाँ है और कैसी भूल हुई है? भूल मिटानी तो होगी न? जो प्रारब्ध में हो उसे भुगतना, लेकिन भूल तो मिटानी ही पड़ेगी न? क्या भूल नहीं मिटानी पड़ेगी?

प्रश्नकर्ता : मिटानी पड़ेगी, दादाजी।

दादाश्री : हाँ, कितनी सयानी हैं आप! अब क्या हर्ज है फिर?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादाजी। वे तो बहुत अच्छे थे, मगर मैंने किच-किच करके बिगाड़ डाला है। आपकी कृपा हुई है न, इसलिए अब फिर से सब सीधा हो रहा है।

खुद ही सुधर जाएँ तो?

कोई कहेगा कि, 'भैया, आप उसे (पत्नी को) सीधी करें।' अरे, उसे सीधी करने जाएगा तो तू टेढ़ा हो जाएगा। इसलिए पत्नी को सीधी करने मत जाना, जैसी भी हो उसे 'करैक्ट' कहना। हमारी उसके साथ सदा की साझेदारी हो तो अलग बात थी, किंतु यह तो एक जन्म के बाद वह कहीं बिछड़ जाएगी। दोनों के कर्म जुदा, दोनों का मृत्युकाल जुदा। न कोई लेना न कोई देना। यहाँ से वह किस के वहाँ जाएगी, क्या पता? हम सीधी करें और अगले जन्म में वह जाए किसी और के हिस्से में!

प्रश्नकर्ता : उसके साथ कर्म बँधे हों तो दूसरे जन्म में साथ तो होंगे न?

दादाश्री : साथ होंगे, मगर अन्य रूप से साथ होंगे। किसी और की पत्नी होकर वह हमारे यहाँ बातें करने आए। क्योंकि कर्म के नियम होते हैं न! यानी हम उसे सीधी करें लेकिन अगले जन्म में उसका तो न पता होगा, न ठिकाना। कोई पुण्यशाली मनुष्य ऐसा होता है जो अमुक जन्मों तक साथ रहे। जैसे कि नेमिनाथ भगवान, नौ जन्मों से राजुल के साथ ही थे। यदि ऐसा हो तो बात अलग है। किंतु यह तो दूसरे जन्म का ही पता नहीं है। अरे! इसी जन्म में ही अलग हो जाते हैं न? उसे 'डाइवोर्स' (तलाक़) कहते हैं न? फिर इस जन्म में ही दो पति करे, तीन पति करे।

हम उसे सुधारने के लिए प्रयत्न नहीं करें। बहुत सुधारने से तो उलटा बिगड़ता है। उसकी खुशी हो तो प्रयत्न करना। वर्ना, सुधारणा के लिए वह खुश नहीं हो और हम सुधारने चलें तो ऐसे सुधारा नहीं जाता। यदि सुधारना चाहें तो पहले हम सुधरे हुए होने चाहिए। मेरे पास सभी लड़कियाँ सयानी हो जाती हैं। सभी स्त्रियाँ सयानी हो जाती हैं। मैं खुद सुधर गया फिर कैसे कोई नहीं सुधरेगा? मेरे पास आप सयाने हो जाएँगे कि नहीं हो जाएँगे?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हो ही जाएँगे न!

जो सीधा हुआ वह सामनेवाले को सुधार सके

खुद सीधा हुआ हो वही सामनेवाले को सुधार सके। प्रकृति धाक-धमकी से नहीं सुधरती, और न ही वश में आती है। धाक-धमकी से तो जगत् खड़ा हुआ है। धाक-धमकी से प्रकृति विशेष बिगड़ती है।

यदि आप दयालु हैं तो सामनेवाले को सुधारने के लिए उससे लड़ना नहीं। उसे सुधारने के लिए तो उसके बराबर का उसे मिल ही जाएगा।

हम सावधान होकर चलें

हरएक बात में हम सामनेवाले के साथ 'ऐडजस्ट' हो जाएँ तो बात कितनी सरल हो जाए। हमें साथ क्या ले जाना है? इसलिए आप उसे सीधा मत करें और वे आपको सीधा नहीं करेंगे। जैसा मिला है वही सोने के समान है। किसी की प्रकृति कभी सीधी नहीं हो सकती। कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी ही रहेगी। मतलब हम सावधान होकर चलें। जैसी हो वैसी भले ही हो, 'ऐडजस्ट एवरीव्हेर।'

धमकाने के समय यदि आपने उसे नहीं धमकाया तो उससे पत्नी ज्यादा सीधी रहेगी। जो गुस्सा नहीं करता, उसका ताप बड़ा सख्त होता है। देखिए न हम कभी किसी को डाँटते नहीं हैं, फिर भी हमारा ताप बहुत लगता है न?

प्रश्नकर्ता : तो फिर क्या वह सीधी हो जाएगी?

दादाश्री : सीधा होने का मार्ग ही यह है। इस कलियुग में ऐसा रास नहीं आता है, मगर उसके अलावा कोई चारा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : मगर वह ज्यादा कठिन है।

दादाश्री : नहीं, नहीं, वह कठिन नहीं है। वही आसान है। गाय के सींग गाय पर भारी।

प्रश्नकर्ता : हमें भी वह सींग मारेगी न?

दादाश्री : कभी किसी दिन हमें लग जाए। गाय सींग मारने आए तो हम बाजू पर हो जाते हैं न, वैसे ही यहाँ पर भी बाजू पर हो जाना।

सुधारना तो तब कहलाए कि पत्नी चाहे कितनी भी अकड़ गई हो मगर हम अपनी शीतलता नहीं छोड़ें, तब सुधारी कहलाए।

आपको सुधारने का अधिकार कितना है? जिसमें चैतन्य है उसे सुधारने का आपको क्या अधिकार है? कपड़ा मैला हुआ हो तो उसे स्वच्छ

करने का आपको अधिकार है, क्योंकि वहाँ सामने से कोई 'रिएक्शन' (प्रतिक्रिया) नहीं है। और जिसमें चैतन्य है वह तो 'रिएक्शनरी' (प्रतिक्रियात्मक) है, उसको आप क्या सुधारेंगे? जहाँ हमारी खुद की प्रकृति ही नहीं सुधरती है वहाँ दूसरों की क्या सुधरेगी? खुद ही लट्टू है। ये सभी 'टोप्स' (लट्टू) हैं, क्योंकि वे प्रकृति के अधीन हैं। पुरुष हुआ नहीं है, पुरुष होने के बाद ही पुरुषार्थ उत्पन्न होता है। अभी तो पुरुषार्थ देखा ही नहीं है।

अनिवार्य जगत् में क्लेश क्यों?

जिसका उपाय नहीं हो उसका क्या किया जाए? जिसका उपाय नहीं हो उसका क्या रोना-धोना? यह अनिवार्य जगत् है। घर में पत्नी का क्लेशी स्वभाव पसंद नहीं आता हो, बड़े भैया का स्वभाव अच्छा नहीं लगता हो, इस तरफ पिताजी का स्वभाव अच्छा नहीं लगता हो, ऐसे समूह में मनुष्य फँस जाए तो भी रहना पड़े। क्योंकि कहाँ जाए? चाहे इस फँसाव से ऊब जाए, मगर जाए कहाँ? चारों ओर बाड़ें हैं। समाज की बाड़ होती है, कि 'समाज मुझे क्या कहेगा?' सरकार की बाड़ें होती हैं। यदि तंग आकर जलसमाधि लेने दरिया किनारे जाए तो पुलिसवाले पकड़ेंगे। यह कहे 'अरे भैया, मुझे आत्महत्या करने दे न, मरने दे न आराम से!' तब वे कहेंगे, 'नहीं, मरने नहीं दिया जाता, यहाँ पर तुमने आत्महत्या करने के प्रयास का गुनाह किया है, इसलिए तुम्हें जेल ले जाते हैं।' मरने भी नहीं देते और जीने भी नहीं देते, इसी का नाम संसार। इसलिए चैन से रहिए न, यह अनिवार्य जगत् है।

इसलिए जैसे-तैसे करके 'ऐडजस्ट' होकर समय गुज़ार लेना ताकि कर्ज चुकता हो जाए। किसी का पच्चीस साल का, किसी का पंद्रह साल का, तो किसी का तीस साल का, लाचार होकर भी हमें कर्ज चुकाना पड़े। भाए नहीं फिर भी वही की वही कोठरी में साथ-साथ रहना पड़े। यहाँ बाईसाहब (पत्नी) का

बिछौना और वहाँ भाईसाहब (पति) का बिछौना! यदि मुँह चढ़ाकर, उलटे मुँह सो जाएँ तब भी बाईसाहब को विचार तो भाईसाहब के ही आएँ न! चारा ही नहीं है। यह जगत् ही ऐसा है। और उसमें भी, केवल हमें वह पसंद नहीं हो ऐसा नहीं है। उनको भी हम पसंद नहीं होते। यानी, इसमें मज़े लेने जैसा नहीं है।

टकराव, वह हमारी ही अज्ञानता

जब तक आपका किसी के साथ मतभेद होता है, वह आपकी निर्बलता की निशानी है। लोग गलत नहीं हैं। मतभेद में भूल आपकी है। लोगों की भूल होती ही नहीं है। कोई जान-बूझकर कुछ करता हो तो हमें वहाँ पर माफ़ी माँग लेनी चाहिए कि, 'भैया, मुझे इसमें कुछ समझ में नहीं आता है।' बाकी, लोग भूल करते ही नहीं हैं। लोग मतभेद करे ऐसे हैं ही नहीं। जहाँ टकराव हुआ वहाँ भूल हमारी ही है। दीवार हमसे टकराई तो दीवार की भूल है या हमारी भूल है?

किसी के भी साथ टकराव हुआ, वह हमारी अज्ञानता की निशानी है। खरा-खोटा भगवान देखते ही नहीं हैं। भगवान तो यही देखते हैं कि, 'वे चाहे कुछ भी बोलें, मगर कोई टकराया तो नहीं है न?' तब कहे, 'नहीं।' भगवान कहे 'बस, हमें इतना ही चाहिए।'

हमारी वज़ह से सामनेवाले को तकलीफ हो ऐसा बोलना वह सबसे बड़ा गुनाह है। और किसी ने ऐसा बोल दिया हो तो हमें उसे दबा देना चाहिए, वह मनुष्य कहलाए।

खरा-खोटा भगवान के यहाँ होता ही नहीं है। ऐसा तो लोगों के वहाँ है। भगवान के यहाँ तो द्वंद्व होता ही नहीं है न? 'चोरियाँ की या दान किया' ऐसा कुछ भगवान के यहाँ होता ही नहीं है। उनके पास तो यदि चोर गया तो भी 'जय सच्चिदानंद' और दानशील जाए तो भी 'जय सच्चिदानंद'। चोर को

दादावाणी

चोरी करने का रोग है और दानशील को दान देने का रोग है, दोनों रोगी हैं। चोर का चोरी करने के पीछे इरादा क्या है? 'पैसे लाकर सुखी हो जाऊँ।' और दानशील का दान करने के पीछे क्या इरादा है? 'पैसे देने से यश फैलेगा, इसमें मैं सुखी होऊँ।' मतलब दोनों समान हैं। भगवान दोनों को रोगी बताते हैं। निरोगी नहीं कहते। निरोगी मतलब जिसे ऐसा किसी भी प्रकार का द्वंद्व नहीं रहा है, वह निरोगी है, वह वीतराग है। यानी टकराव होने पर हमें क्या समझना है?

प्रश्नकर्ता : हमारी ही भूल है।

दादाश्री : हाँ, और उसका तुरंत स्वीकार कर लेना। टकराव हुआ तो हमें देखना है कि 'ऐसा मैंने कैसा बोल दिया कि यह टकराव हुआ?' यानी निकल आया हल, फिर पझल सोल्व हो गया (समस्या का समाधान हो गया)। वर्ना जब तक हम 'सामनेवाले की भूल है' ऐसा खोजते रहेंगे तब तक कभी यह पझल सोल्व नहीं होगा। 'हमारी भूल है' ऐसा मानेंगे तभी इस जगत् से किनारा कर सकेंगे। दूसरा कोई उपाय नहीं है। अन्य सभी उपाय उलझानेवाले हैं और उपाय करना वह हमारा अंदरूनी रूप से छिपा अहंकार है। उपाय किस लिए खोजते हैं? सामनेवाला हमारी भूल निकाले तो हमें ऐसा कहना चाहिए कि, 'मैं तो पहले से ही टेढ़ा हूँ!'

द्वेष हुआ वहाँ प्रतिक्रमण

यह तो जंजाल है सारा। आपको जिसके लिए जितने उलटे विचार आए उतने प्रतिक्रमण किया करना। जिस दिन कोई ऐसे विचार आए, तो बस उनके प्रतिक्रमण करते रहना। उन्हें तुरंत मिटा देना। प्रतिक्रमण करने से हमारे अटेक (आक्रमण) के सारे विचार फिर बंद हो जाते हैं। इसलिए फिर मन में द्वेष नहीं होता। जिसके प्रति मन अकुलाता हो उसके प्रतिक्रमण करने से फिर वह अकुलाना बंद हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : कोई बुरा अवसर आया हो, मान लीजिए सामनेवाला व्यक्ति आपके लिए खराब बोल रहा हो या कर रहा हो तो उसके रिएक्शन के रूप में अंदर हमें जो गुस्सा आता है उसके फलस्वरूप जबान से शब्द निकल जाते हैं, लेकिन मन भीतर में कहता है कि यह गलत हो रहा है, तो जबान से बोलने में ज्यादा दोष है या फिर से मन से किया गया दोष ज्यादा कहलाए?

दादाश्री : जबान से किया गया झगड़ा उसी समय तुरंत ही हिसाब बराबर करके चला जाता है और मन से किया गया झगड़ा आगे बढ़ेगा। यदि जबान से किया तो वहाँ पर तो सामनेवाले को जो कहा होगा उसे वह लौटा देगा, उसका फल तुरंत मिल जाता है। और मन से करने पर उसका फल तो, वह फल पकने के बाद मिलेगा। आज जो बीज बोया वह काँजीज कहलाए। इसलिए यदि मन से हो गया हो, तो काँजीज नहीं पड़े इसके लिए मन से प्रतिक्रमण करना।

प्रतिक्रमण तो चाहिए नगद ही

प्रश्नकर्ता : अनादिकाल से प्रतिक्रमण तो करता आया है, फिर भी छुटाकारा तो हुआ नहीं है?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करता आया है मगर सच्चे प्रतिक्रमण नहीं किए हैं। सच्चे प्रत्याख्यान और सच्चे प्रतिक्रमण करने पर उसका निपटारा होगा। प्रतिक्रमण शूट ऑन साइट होना चाहिए। यदि मुझसे एक शब्द ज़रा टेढ़ा निकल गया कि मेरा अंदर प्रतिक्रमण हो जाना चाहिए, तुरंत ही, ऑन द मोमेन्ट, उसमें उधार नहीं चलता। प्रतिक्रमण बासी नहीं रख सकते। मतलब प्रतिक्रमण एक मिनट के लिए भी मत चूकना। सयानेपन के साथ काम निकाल लेना है। अभी कालाबाजारी का कोई माल लाए हों, तो उसे कालाबाजार में ही बेचना पड़े, मगर हमें कहना पड़े कि इसका प्रतिक्रमण कीजिए। पहले ऐसे प्रतिक्रमण नहीं किए थे इसलिए कर्मों के तालाब

भरे हैं सारे, प्रतिक्रमण किया मतलब शुद्धि कर डाली। यह प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान पाँच सौ-पाँच सौ, हजार-हजार होंगे तब काम होगा।

उसके प्रतिक्रमण ज़रूरी नहीं है

प्रश्नकर्ता : अन्य सारी जो फाइलें हैं उनको तो हम समभाव से निपटारा कर सकते हैं मगर इस फाइल नंबर एक का समभाव से निपटारा कैसे किया जाए यह विस्तार से समझाइए न? क्योंकि सारी झँझट फाइल नंबर एक की ही होती है।

दादाश्री : उन झँझटों को देखने से ही वे चली जाएँगी, फाइल देखने से ही। आड़ा हो या टेढ़ा हो, उसे (फाइल के रूप में) देखने से ही बखेड़े चले जाएँगे। यदि सामनेवाला क्लेइम करे तो उसका प्रतिक्रमण करना पड़े। किंतु इसमें तो दावा दायर करनेवाला ही कोई नहीं है न? दावा दायर करनेवाला कोई नहीं है इसलिए उसे देखने से ही चले जाएँगे। मन में बुरे विचार आते हों, थोड़े आड़े विचार आते हों, बुद्धि खराब होती हो उन सभी को देखा करना। जो जो कार्य करते हों उसमें हर्ज नहीं है, हमें तो उसे देखा करना है।

अक्रम का यह अनोखा औषधालय

प्रश्नकर्ता : अमुक प्रकार की गाँठें, पिघल जाए ऐसी होती है। किंतु कठिन गाँठें, वक्र, आड़ी गाँठें, वे देखने से कैसे पिघले?

दादाश्री : हमारी दवाई ऐसी है न इसलिए सभी गाँठें पिघलती ही रहें। हमें देखा करना है। वह दवाई ठेठ मोक्ष में ले जाए ऐसी है, और सारा पुराना रोग निकाल दे। संसार रोग मात्र का नाश कर डाले। संसार रोग तो क्रोनिक हो गए हैं। क्रोनिक यानी, मूल गाँठ जैसी होनी चाहिए उसकी तुलना में आड़ी-टेढ़ी गाँठें हो गई हैं। आड़ी-टेढ़ी मतलब क्रोनिक, दवाई से भी नहीं मिटे ऐसी। मतलब यह जो स्वरूपज्ञान है, उससे यह सारा संसाररोग मिट जाएगा

और वह मोक्ष में ले जाएगा। यानी जैसे जैसे समय गुजरता जाए वैसे वैसे एक ओर आरोग्य उत्पन्न होता है और उसका भली भाँति रक्षण भी करता है। वर्ना मोक्ष में जा ही नहीं सकते न! यह कार्य यदि आपको सौंपा हो तो आपसे खुद से नहीं होता, लेकिन अंदर वह क्रियाकारी ज्ञान ही कार्य किया करता है। यानी आड़ी-टेढ़ी सारी गाँठें पिघल जाएगी। हमें देखा करना है, दूसरा कुछ करना नहीं है। मन में ऐसा नहीं रखना कि 'ऐसा क्यों होता है? अभी यह क्यों पिघल नहीं जाती?' हमें तो सिर्फ देखा करना है। हम यदि देखें नहीं, तब भूल हुई कहलाए। हम उसका निरीक्षण नहीं करें तब भूल हुई कहलाए।

निबेड़ा लाइए ज्ञान के द्वारा

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद क्या कर्मबंधन होता है?

दादाश्री : टेढ़ा बोलने पर कर्म बँधता नहीं, लेकिन छूटता भी नहीं। कर्म कब छूटे? जब वह ज्ञानपूर्वक हो। यानी, समझदारी के साथ ज्ञानपूर्वक उसका निबेड़ा होता है। अज्ञान को लेकर बाँधे थे इसलिए ज्ञान को लेकर उनका निबेड़ा लाएँ तब छूटते हैं। आज यदि नहीं रुचे तब भी उसका ज्ञान के जरिए निबेड़ा लाना पड़े।

ऐसा कभी मिला नहीं है... इसलिए काम निकाल लें

यह तो सरल से भी सरल मोक्षमार्ग है, आसान से आसान मोक्ष! ऐसी सरलता कभी किसी ने नहीं दी है। बीबी-बच्चों के साथ भी कर्म नहीं बँधते हैं। अतिशय सरल। ऐसा हुआ नहीं है। यह निर्मल मार्ग है। भगवान भी एक्सेप्ट (स्वीकार) करें ऐसा मार्ग है। बहुत सरल और सीधा मार्ग रखा गया है। अब आप जैसा सदुपयोग करना चाहें, वैसा कीजिए।

जय सच्चिदानंद

दादावाणी

दादाजी के आप्तसूत्र तथा चित्रपटवाले वर्ष 2010 के आकर्षक हिन्दी कैलेन्डर

कैलेन्डर 2010 सुरत में प.पू. दादा भगवान के १०२वे जन्मजयंती महोत्सव तथा भूज त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव के दौरान उपलब्ध होंगे। उसके अलावा त्रिमंदिर अडालज तथा प्रमुख सत्संग सेन्ट्रो से भी स्टोक उपलब्ध होगा तब तक प्राप्त होंगे।

परम पूज्य दादा भगवान की जन्मशताब्दी के अवसर पर थीमपार्क में प्रदर्शित मल्टीमीडिया शॉ की हिन्दी डीवीडी

धर्म का मर्म, हुआ सो न्याय, भावविज्ञान, क्या संसार में रहकर आत्मज्ञान पाना संभव है?, कर्ता कौन ?- इन मल्टीमीडिया शॉ की डीवीडी हिन्दी में परम पूज्य दादा भगवान के १०२वे जन्मजयंती महोत्सव पर उद्घाटित होकर सभी के लिए उपलब्ध होगी। आप यह डीवीडी अडालज त्रिमंदिर के फोन नं. (०७९) ३९८३००३४ या ९९२४३४३८०५ पर संपर्क करके भी प्राप्त कर सकते हैं।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल्स पर

- भारत** + 'संस्कार' पर हर रोज़ रात ८-३० से ९ (हिन्दी में)
+ 'आस्था' पर हर रोज़ शाम ६-३० से ७ (हिन्दी में)
+ 'सह्याद्रि' दूरदर्शन मराठी पर सुबह ७-३० से ८ (सोम, मंगल, गुरु, शनि) तथा सुबह ७-१५ से ७-३० (बुध, शुक्र) - (मराठी में)
+ गुजरात में 'दूरदर्शन' पर हर रोज़ दोपहर ३-३० से ४ (अन्य राज्यों में डीडी-गुजराती पर उसी समय)
+ 'दूरदर्शन - डीडी-गुजराती' पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
- USA** + 'TV Asia' पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
- USA-UK** + 'Aastha International' पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में)
- Africa** + 'Aastha International' पर हर रोज़ सुबह १०-३० से ११ (गुजराती में)
- + **समग्र विश्व में** (भारत के अलावा) **सोनी टीवी** पर (सोम से शुक्र) सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल्स पर

- भारत** + 'झी जागरण' पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (हिन्दी में)
+ 'दूरदर्शन' डीडी-गुजराती पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)
- U.S.A.** + 'SAHARA ONE' पर सोम से शुक्र, सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
- UK-Europe** + 'MA TV' Mon to Thu 6-30 to 7 PM & Fri to Sun 4-30 to 5 PM (गुजराती में)
- USA-UK** + 'Aastha International' पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)
- Africa** + 'Aastha International' पर हर रोज़ रात १२ से १२-३० (गुजराती में)

☞ 'दादावाणी' मैग्जीन् हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में हर महिने की १५ तारीख को प्रकाशित होता है। अगर 'दादावाणी' आपको देर से मिलता है, तो कृपया मैग्जीन् के कवर पर अपना नाम-पता-पीनकोड जाँच करें। अगर उसमें कोई गलती नजर आये तो हमें संपर्क सूत्र के पते पर 'दादावाणी विभाग' को पत्र द्वारा तुरंत सूचित करें। अगर आपको मैग्जीन् नहीं मिलता है, तो हमें पत्र द्वारा सूचित करें। आपका पत्र मिलने पर मैग्जीन् अगर हमारे पास स्टोक में होगी तो दुबारा पोस्ट करने का प्रबंध किया जायेगा।

दादावाणी

पूज्य नीरूमाँ के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों का सत्संग कार्यक्रम

भिलाई (जि. दुर्ग, छत्तीसगढ)

२ नवम्बर शाम ६ से ८

स्थल: दादा भगवान फाउन्डेशन सत्संग सेन्टर, मरोड़ा वॉटर टैंक के पास, भिलाई. संपर्क : 9827481336
रायपुर (छत्तीसगढ)

३ नवम्बर शाम ५ से ७

स्थल: महंत घासीदास म्युझियम ऑडिटोरियम, राज भवन के पास, रायपुर. संपर्क : 9425245616
बिलासपुर (छत्तीसगढ)

४ नवम्बर शाम ५ से ७

स्थल : देवकीनंदन दिक्षित सभा भवन, लाल बहादुर शास्त्री स्कूल ग्राउन्ड, बिलासपुर. संपर्क : 9425245616
जमशेदपुर (झारखंड)

५ नवम्बर शाम ४ से ७

स्थल : श्री गुजराती सनातन समाज, खारकाई लिन्क रोड़ (बिस्तुपुर), जमशेदपुर. संपर्क : 9709220292
बोकारो (झारखंड)

६ नवम्बर दोपहर २ से ४

स्थल : जैन भवन, गुजरात कॉलोनी, चास, बोकारो. संपर्क : 9304399090

६ नवम्बर शाम ५ से ७

स्थल : गांधीनगर योद्धाधि मोड़, चुना फेक्ट्री पास, चास, बोकारो. संपर्क : 9304203876
आरा (बिहार)

७ नवम्बर दोपहर ३ से ५-३०

स्थल : अमन उत्सव हाल, पकड़ी चौक, आरा. संपर्क : 9934620084
पटना (बिहार)

८ नवम्बर सुबह १० से १२

स्थल : श्वेतांबर जैन मंदिर, नागेश्वर कॉलोनी, बाकरगंज, पटना. संपर्क : 9431015601

८ नवम्बर दोपहर २-३० से ४-३०

स्थल : जैन श्वेतांबर तेरापंथ सेवा ओसवाल भवन, चौथा तल्ला, नारायण प्लाजा, एक्विजिबिशन रोड़, पटना.

८ नवम्बर शाम ५ से ७

स्थल : नागा बाबा ठाकुरबाड़ी, मथुराप्रसाद सिंहा रोड़, कदम कुआँ, सब्जी मार्केट के सामने, पटना.
हरनौल (बिहार)

९ नवम्बर दोपहर ३ से ५

स्थल : श्री सुधीरसिंग का मकान, मेन-बख्तियारपुर-राँची रोड़, हरनौल, जि.-नालंदा. संपर्क : 9852119351
मुजफ्फरपुर (बिहार)

१० नवम्बर दोपहर २ से ४

स्थल : जिला चित्रगुप्त एसोसिएशन हॉल, छाता चौक, मुजफ्फरपुर. संपर्क : 9608030142

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

हिन्दी में सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम

कोलकता

१२-१३-१४ नवम्बर, शाम ५-३० से ८ - सत्संग तथा १५ नवम्बर, (रवि)-शाम ५-३० से ९-ज्ञानविधि
स्थल : विद्यामंदिर (हिन्दी हाईस्कूल), १, मोईरा स्ट्रीट, मीन्टो पार्क के सामने. फोन: 033-32933885

पटना

१७-१८ नवम्बर, शाम ५-३० से ८ - सत्संग तथा १९ नवम्बर, (गुरु) -शाम ५ से ८ - ज्ञानविधि
स्थल : भारतीय नृत्यकला मंदिर, फ्रेज़र रोड, रेडियो स्टेशन के सामने, पटना. फोन : 9431015601

त्रिमंदिर अडालज

७ नवम्बर (शनि), शाम ४-३० से ६-३० सत्संग और ८ नवम्बर (रवि), दोपहर ३-३० से ७ ज्ञानविधि
२ जनवरी (शनि) शाम ४-३० से १०-३० सत्संग-भक्ति और ३ जनवरी (रवि), दोपहर ३-३० से ७ ज्ञानविधि
१० से १७ जनवरी - 'प्रतिक्रमण' ग्रंथ पर गुजराती में पारायण सत्संग शिविर. (रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक)

सुरेन्द्रनगर (गुजरात)

२८ नवम्बर, रात ७-३० से १० - सत्संग तथा २९ नवम्बर (रवि), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि
स्थल : आर्ट्स एन्ड सायन्स कोलेज ग्राउन्ड, बस स्टेन्ड रोड. फोन : 9879232877

राजकोट

१-२ दिसम्बर, रात ७-३० से १० - सत्संग तथा ३ दिसम्बर (गुरु), शाम ६-३० से १० - ज्ञानविधि
स्थल : श्री विराणी हाईस्कूल ग्राउन्ड, टागोर रोड. फोन : 9924343910

जूनागढ

५ दिसम्बर, रात ७-३० से १० - सत्संग तथा ६ दिसम्बर (रवि), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि
स्थल : ए. जी. स्कूल ग्राउन्ड, तलाव दरवाजा. फोन : 9427242889

वेरावल

८ दिसम्बर, शाम ७-३० से १० - सत्संग तथा ९ दिसम्बर (बुध), शाम ६-३० से १० - ज्ञानविधि
स्थल : रेयोन क्रिकेट ग्राउन्ड, सुपरवाइज़र बिल्डिंग के पीछे, ८० फिट रोड. फोन : 9898221033

जामनगर

१२ दिसम्बर - सत्संग तथा १३ दिसम्बर (रवि) - ज्ञानविधि
समय तथा स्थल की जानकारी के लिए संपर्क : 9377716561

मोरबी

१५ दिसम्बर, रात ८ से १०-३० - सत्संग तथा १६ दिसम्बर (बुध), शाम ७-३० से ११ - ज्ञानविधि
स्थल : मार्केटिंग यार्ड, हाउसींग बोर्ड के सामने, शनाला रोड. फोन : 9426932436

गांधीधाम

१९ दिसम्बर, रात ७ से ९-३० - सत्संग तथा २० दिसम्बर (रवि), शाम ६ से ९-३० - ज्ञानविधि
स्थल : शक्तिनगर क्रिकेट ग्राउन्ड, गांधीधाम. फोन : 9601551687

दादावाणी

जिस भूमि पर अनुपम आत्मविज्ञानी परम पूज्य दादा भगवान को अद्भूत आत्मज्ञान प्रकट हुआ, उस सुरत शहर में मनाया जाएगा....

परम पूज्य दादा भगवान का 90^{वाँ} जन्मजयंती महोत्सव

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में...

दिनांक २८ अक्टूबर से १ नवम्बर २००९

- ✦ आध्यात्मिक ज्ञानशिविर - दि. २८ से ३१ अक्टूबर, सुबह १० से १२-३०, रात ८-३० से ११
 - ✦ ज्ञानविधि (आत्मसाक्षात्कार पाने का भेदज्ञान का प्रयोग) दि. ३१ अक्टूबर (शनि), शाम ७-३० से ११
 - ✦ जन्मजयंती-दि. १ नवम्बर, सुबह ८-३० से १-पूजन-दर्शन-भक्ति तथा शाम ४-३० से ६-३०-दर्शन
- विशेष आकर्षण : मल्टीमीडिया शॉ (थीमपार्क) और बच्चों के लिए बालदुनिया (चिल्ड्रन पार्क) - हररोज शाम ५ से रात ११ बजे तक.

स्थल : ब्रजभूमि ग्राउन्ड, ब्रज चोक, हवेली रोड, सरथाणा जकात नाका के पास, वराछा रोड, सुरत.

फोन : 09924343717, 09426478791

बाहरगाँव से आनेवाले महात्मा-मुमुक्षुओं की व्यवस्था हेतु खास सूचनाएँ

- (१) इस महोत्सव में भाग लेने इच्छुक महात्मा-मुमुक्षु दि. २० अक्टूबर, २००९ तक अपने गाँव/शहर के सत्संग सेन्टर में रजिस्ट्रेशन करवाएँ और जहाँ सत्संग सेन्टर नहीं है, वे महात्मा-मुमुक्षु अडालज त्रिमंदिर (फोन: ०७९-३९८३०४००) पर अपना रजिस्ट्रेशन अवश्य करवा लें।
- (२) महोत्सव में स्त्रियों एवं पुरुषों के रहने की व्यवस्था अलग-अलग होने से अपना सामान अलग से लाएँ।
- (३) ओढ़ने एवं बिछाने का चदर, एयर पीलो, टोर्च, लॉक, ज़रूरी दवाएँ अपनी ज़रूरत के अनुसार साथ ले आएँ।
- (४) किसी भी प्रकार की अनावश्यक क्रीमती चीजें साथ में न लाएँ।

जन्मजयंती स्थल की सामान्य जानकारी

- ✦ महोत्सव स्थल, नेशनल हाइवे पर स्थित कामरेज चार रास्ता से ८ कि.मी. और सुरत रेल्वे स्टेशन-बस डिपो से १० कि.मी. की दूरी पर है। दोनों जगह से ओटो रीक्षा का किराया शटल रीक्षा में अंदाजित रु.७ एक व्यक्ति का और पूरे ओटो रीक्षा का किराया लगभग रु. ३० से ४० होता है। रेल्वे स्टेशन-बस डिपो से सिटी बस सरथाणा जकात नाका तक जाती है।
- ✦ महोत्सव स्थल से महात्माओं की रहने की व्यवस्था अधिकतम ४ कि.मी. के विस्तार में है।

भूज (कच्छ) त्रिमंदिर का प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक २३ दिसम्बर से २७ दिसम्बर २००९

आध्यात्मिक ज्ञानशिविर - दि. २३, २४ और २६ दिसम्बर

ज्ञानविधि - दि. २५ दिसम्बर, शाम ४-३० से ८ बजे तक

मुख्य प्राणप्रतिष्ठा - २७ दिसम्बर सुबह ६ बजे से...

स्थल : त्रिमंदिर, हिल गार्डन के पीछे, सहयोगनगर के पास, एरपोर्ट रोड, भूज. फोन : ९९२४३४३७६४

सूचना : इस महोत्सव में भाग लेने इच्छुक महात्मा-मुमुक्षु दि. ३० नवम्बर, २००९ तक अपने गाँव/शहर के सत्संग सेन्टर में रजिस्ट्रेशन करवाएँ और जहाँ सत्संग सेन्टर नहीं है, वे महात्मा-मुमुक्षु अडालज त्रिमंदिर (फोन: ०७९-३९८३०४००) पर अपना रजिस्ट्रेशन अवश्य करवा लें।

अक्टूबर २००९
वर्ष - ४, अंक - १२

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2009-2011
Valid up to 31-12-2011
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2009-2011
Valid up to 31-12-2011
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.



परम पूज्य दादा भगवान का

१०२वाँ

जन्मजयंती महोत्सव

सूरत में जन्मजयंती महोत्सव
दि. 28 अक्टूबर से 1 नवम्बर 2009



Publisher & Editor Mr. Deepakbhai Desai on behalf of Mahavideh Foundation Printed at Mahavideh Foundation Printing Press :- Parshvanath Chambers, Income Tax, Ahmedabad-14 and published.